आर.एन.आई. नं. एम.ए.आर./2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
"चतुर्वेदी चन्द्रिका" नवम्बर 2024

प्रकाशन : 03 तारीख
पृष्ठ संख्या : 44
मूल्य : 20/–

स्थापना – माघ/शुक्ल पूर्णिमा सम्वत् 1947 सन् 1890

चतुर्वेदी चन्द्रिका

वर्ष –25 | अंक–11 | कार्तिक – मार्ग शीर्ष स.2081 | नवम्बर 2024

दीपावली विशेषांक

सुख के दीप जले,
घर आंगन में खुशहाली हो,
बड़ों का आशीर्वाद और
अपनों का प्यार मिले
ऐसी मंगल दिवाली हो!!

शुभ दीपावली

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा का मुखपत्र

दीपावली महापर्व

पर लखनऊ समाज की हार्दिक

शुभकामनाएं

दिलीप जी

पदम जी

ललित जी

नवीन जी

मनीष जी

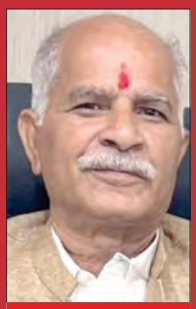

पंकज जी

सौरभ जी

(र.क्र. 2956)

दीपावली महापर्व
पर हार्दिक
शुभकामनाएं

शशांक चतुर्वेदी

आशुतोष चतुर्वेदी

करूणेश चतुर्वेदी

गोविंद चतुर्वेदी

अभयराज चतुर्वेदी

मनीष चतुर्वेदी

लोकेन्द्र चतुर्वेदी

संजय मिश्रा

पालागन

पालागन

मे. जगदीशप्रसाद सुरेन्द्रनाथ चौबे

लाख चौरी, चपड़े के थोक व्यापारी, गोंदिया (महा.)

Lakh

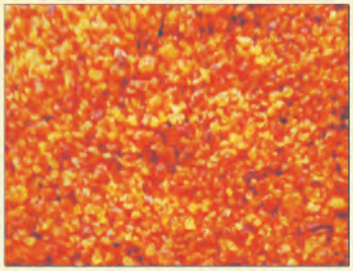

Lakh Dana

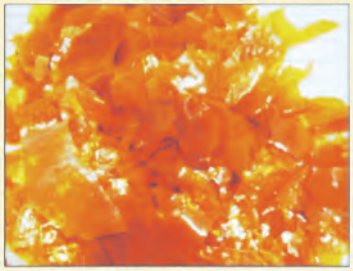

Lakh Chapda

दिपावली की हार्दिक शुभकामनायें ...

आपके प्रगती पथ पर एक दीप हमारी ओर से ...

प्रोप्रा.

देवेन्द्रनाथ

9823545427

नागेन्द्रनाथ

9422130777

भुवनेश कुमार

9422130798

सरजुप्रसाद, हेमंतकुमार, मनोजकुमार, विरेन्द्रकुमार, परितोष, चंचल, देवांश, प्रणव, एवं समस्त बंशीधर बाबा परिवार

(पुराकन्हेरा-आगरा) गोंदिया

पंजाब नेशनल बैंक के सामने, गोंदिया (महा.)

(र.क्र. 2958)

शुभकामनाएं

ईशान चतुर्वेदी ने पुनः एक बार अपनी उपलब्धियों से समाज को गौरवान्वित किया है। उन्हें इस वर्ष 'वीरामंत्री फैलोशिप फार इण्टरनेशनल लॉ ऑन सस्टेनेबल डवलपमेंट' तथा गोल्ड मैडल से मनीला में आयोजित समारोह में सम्मानित किया गया है। यह फैलोशिप वर्ष में एक बार आई.सी.जे. के पूर्व उपाध्यक्ष की स्मृति में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय, मैक्गिल विश्वविद्यालय, कोलंबो विश्वविद्यालय, गोनाश विश्वविद्यालय तथा सेंटर फॉर इण्टरनेशनल सस्टेनेबल लॉ के द्वारा दी जाती है। प्रो. ईशान इस सम्मान को पाने वाले पहले भारतीय विधिवेत्ता हैं। यह उन्हें सस्टेनेबल डवलपमेंट लॉ के विषय में पथ–प्रदर्शक नवीन शोध करने के लिये दिया गया है। प्रो. ईशान सम्प्रतः स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय अमेरिका में रिसर्चर व पी.एच.डी. शोधार्थी के पद पर कार्यरत है। यह पुरुस्कार न केवल उनके पूर्व में अर्जित उपलब्धियों को रेखांकित करता है, वरन् आगे भी इस क्षेत्र में उनके द्वारा नेतृत्व को बढ़ावा देता है। समस्त चतुर्वेदी समाज प्रो. ईशान चतुर्वेदी की इस उपलब्धि से गौरवान्वित हुआ है। आप फिरोजाबाद निवासी प्रख्यात सर्जन डॉ. अपूर्व एवं श्रीमती अर्चना के पुत्र एवम् पद्मभूषण पं. बनारसी दास चतुर्वेदी के प्रपौत्र हैं।

(र.क्र. 2954)

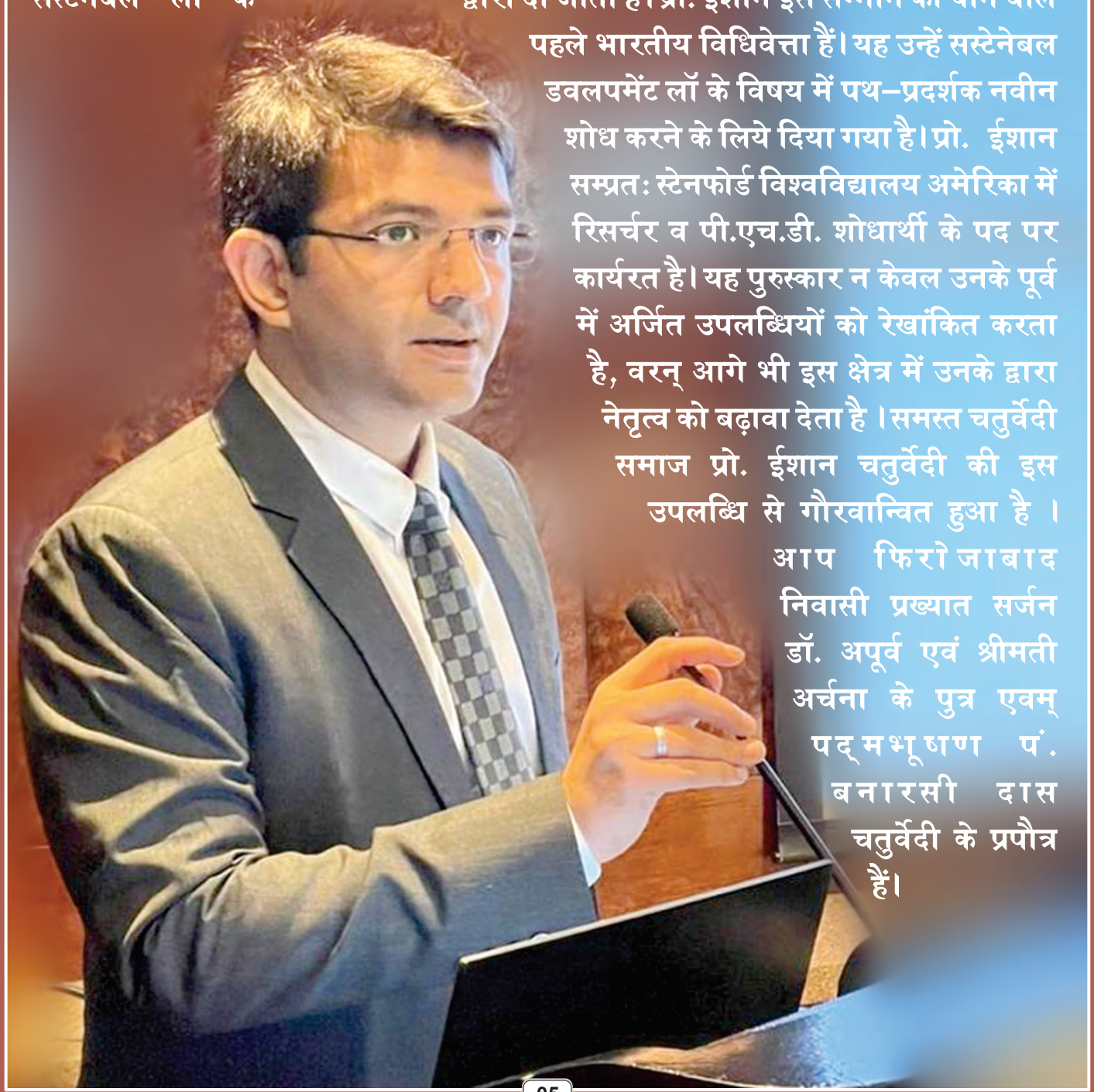

हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं

वरुण चतुर्वेदी

चि. वरूण चतुर्वेदी पुत्र डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने सन् 2014 में बी.टेक (सिविल) आई.आई.टी.दिल्ली से पास की।

सन् 2019 में यूपीएससी सिविल सर्विस (भारतीय प्रशासनिक सेवा) में चयनित होकर रेल्वे में IRPS ज्वाइन की। वरूण ने GMAT में 740/800 अंक प्राप्त किए। साथ ही CFA Level-II पास की। वर्तमान में वरुण डीपीओ के पद पर जबलपुर (WCR) में पदस्थ हैं।

आयुषी चतुर्वेदी

कु. आयुषी चतुर्वेदी पुत्र डॉ. मीनाक्ष व डॉ. अंजना चतुर्वेदी ने MBBS की पढ़ाई 70% अंकों के साथ जबलपुर मेडीकल यूनिवर्सिटी से पास की। साथ ही आयुषी के गायनी व आब्सट्रेटिक्स में आनर्स लाने पर मेडीकल कॉलेज द्वारा सम्मानित किया गया। वर्तमान में डॉ. आयुषी रेडिएशन ऑकोलॉजी में एम.डी. सेकण्ड ईयर की छात्रा हैं व चिरायु मेडीकल कॉलेज (जबलपुर मेडीकल यूनिवर्सिटी) से पीजी कर रही हैं।

।। हम दोनों के उज्जवल भविष्य की शुभकामना करते हैं ।।

चतुर्वेदी मैटरनिटी एण्ड जनरल हॉस्पिटल प्रा.लि.

1, लाला लाजपतराय कॉलानी, रायसेन रोड, भोपाल (म.प्र.), मो. 9826023188, 9826628188

(र.क्र. 2945)

खुशियों एवं प्रकाश के

दीपावली महापर्व पर

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं

ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी (गाजियाबाद)
राकेश कुमार चतुर्वेदी 'चुनचुन' (बरेली)
दिनकर राव चतुर्वेदी (फरौली)
शैलेन्द्र चतुर्वेदी (फरीदाबाद)
प्रवीन कुमार चतुर्वेदी 'छौना' (फरौली)
शैलेन्द्र चतुर्वेदी 'शालू' (फरौली)
गौरी शंकर चतुर्वेदी (फरौली)
लोकेन्द्र नाथ चतुर्वेदी (गाजियाबाद)
सौरभ चतुर्वेदी (लखनऊ)
नवीन चतुर्वेदी (बेंगलौर)
नरेन्द्र कुमार चौबे (ग्वालियर)
जय चतुर्वेदी 'नानू' (फरौली)
सुशील कुमार चतुर्वेदी (फरीदाबाद)

एवं समस्त चतुर्वेदी समाज फरौली

(र.क्र. 2300) 4/12

दिपावली एवं नववर्ष

की

हार्दिक शुभकामनाएं

श्री राजेन्द्र जैन
पुर्व विधायक

सौ.वर्षाताई पटेल
अध्यक्ष, मनोहरभाई पटेल अॅकेडमी

श्री प्रफुल पटेल
सांसद, राज्यसभा

गोंदिया (महाराष्ट्र)

(र.क्र. 2958)

महिला प्रकोष्ठ द्वारा माता की आराधना

आपके परिवार के उत्सव में हमारी सेवाओं का उजाला!

Bharatgas
COOK FOOD. SERVE LOVE

इस दीपावली, हम आपका धन्यवाद करते हैं
कि आपने हमें अपने परिवार की सेवा का अवसर दिया।
रेखा गैस एजेंसी हर घर की रसोई में वही प्यार और सुरक्षा लेकर आती है,
जो एक मां अपने परिवार के लिए चाहती है।

आपके हर उत्सव को और भी खास बनाने में हम हमेशा साथ हैं।
रेखा गैस एजेंसी की ओर से आपको और आपके परिवार को
खुशियों और समृद्धि से भरी दिवाली की शुभकामनाएं!

- श्री. दिलीप चौबे एवं श्रीमती सुनंदा चौबे
- श्री. राहुल चौबे एवं श्रीमती प्रज्ञा चौबे
- कुमारी पिहू राहुल चौबे

रेखा गॅस एजन्सी

दु. नं. 109, खान्देश मिल शॉपिंग कॉम्प्लेक्स, जलगांव. 425001 फोन: (0257) 2221095,
2221195, 2225195, 2228495. | rekhagas20032003@rediffmail.com

(र.क्र. 2946)

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से अपनी बात	13
संपादकीय	14
कार्यकरिणी बैठक (संशोधित)	15
दीपावली का प्रारंभ दिवस धनतेरस	18
सतयुग व त्रेतायुग में दिवाली	20
धन दान का रहस्य	21
'शारदीय नवरात्र की सुवास पूर्वोत्तर से'	22
जायका-स्वाद का	23
तुलसी विवाह	28
साड़ी और जींस वार्तालाप.....	29
सम्पादक के नाम पत्र	30
यम द्वितीया	30
रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान माला	31
शाखा समाचार	32
समाज समाचार	34
बिछड़े स्वजन	34

अंक 11
नवम्बर 2024, वर्ष - 25

सभापति
श्रीमती ऊषा चतुर्वेदी
president@chaturvedimahasabha.in

सचिव
श्री शशांक चतुर्वेदी
मोबा. 9826086879

कोषाध्यक्ष
श्री ज्ञानेन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 9312242661

संपादक सलाहकार मंडल
डॉ. विनीता चौबे, भोपाल
डॉ. कुश चतुर्वेदी, इटावा
श्रीमती चित्रा चतुर्वेदी, भोपाल

संपादक
दिलीप सिकन्दरपुरिया, लखनऊ
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', BM57, नेहरू नगर
करूणाधाम आश्रम के सामने, भोपाल
मोबा. 8707894349
ई- मेल :
sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

उपसंपादक
लोकेन्द्रनाथ चतुर्वेदी, गाजियाबाद

वेबसाइट : www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा भोपाल अदालत में किया जायेगा।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
: Account No. :
1006238340
: IFSC Code :
CBIN0283533
: Branch :
Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

SHREE MATHUR CHATURVED
10292296@cbin
BHIM UPI

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा आजीवन सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
महासभा सत्र + पत्रिका
वार्षिक सदस्यता शुल्क-
101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : शशांक चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक : **दिलीप सिकन्दरपुरिया**
वितरण सहयोगी : विश्वास चतुर्वेदी - 8160686094

सभी सदस्यों को पत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा कार्यकारिणी समिति 2024–2027

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

संरक्षक:- डा० सतीश जी(नागपुर), श्री भरत जी (पूर्व सभापति) भोपाल,श्री आर.आर.जी (पूर्व सभापति) मुम्बई, श्री कमलेश जी पाण्डे(पूर्व सभापति) नोएडा, डॉ. प्रदीप जी (पूर्व सभापति) दिल्ली, ले. जन. विष्णुकांत जी(नोएडा), श्री विकास जी (कानपुर), श्री संतोष जी चौबे (भोपाल), श्री देवेन्द्र जी चौबे (गोंदिया), श्री महेश जी (दिल्ली)।

परामर्शदाता मण्डल:- श्री अविनाश जी (कानपुर), श्री कैलाश जी(कासगंज), डॉ. ऋषभ जी (देहरादून), श्री उपेन्द्र जी पाण्डे (कोलकाता),श्री भरत कुमार जी (रिषड़ा),श्री शिव जी (कोटा), श्रीमती बीना जी मिश्रा (मैनपुरी/आगरा), डॉ. निखिल जी (आगरा)

सभापति:- श्रीमती ऊषा जी भोपाल

उप-सभापति:- श्री मुनीन्द्र नाथ जी (नोयडा), श्री पंकज जी (मुम्बई), श्रीमती आभा जी (नागपुर), डॉ. कुश जी (इटावा), श्री विनोद जी (गुरूग्राम), श्री सुमंत जी (आगरा), श्री अंशुमान जी (जयपुर)

सचिव:- श्री शशांक जी (भोपाल)

सह-सचिव:- श्री आशुतोष जी (कानपुर), श्री करूणेश जी (ग्वालियर), श्री गोविन्द जी (जयपुर), श्री अभयराज जी (गुरूग्राम), श्री मनीष जी (कोटा), श्रीमती बबीता जी (लखनऊ), श्री संजय जी (अहमदाबाद)

कोषाध्यक्ष:- श्री ज्ञानेन्द्र जी (साहिबाबाद)

सम्पादक:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), उप सम्पादक:- श्री लोकेन्द्र जी(गाजियाबाद)

मा. कार्यकारिणी सदस्य गण:- श्री दिलीप सिंकदरपुरिया (लखनऊ), डा० राकेश जी (मथुरा),श्री मनीष जी (हरदोई), श्री लोकेन्द्र जी (गाजियाबाद), श्री भुवनेश कुमार जी चौबे (गोंदिया), श्री अजय जी चौबे (भोपाल), श्री राकेश कुमार जी 'चुनचुन' (बरेली), श्री विशाल जी (आगरा), श्री राहुल जी (मैनपुरी) श्री प्रदीप जी 'संजू' (गाजियाबाद), श्री राजीव जी (अहमदाबाद), श्री विवेक जी (मुम्बई),श्री विपिन जी (लखनऊ), श्री मनीष जी (दिल्ली), श्री ललित जी (लखनऊ), श्रीमती विनीता जी (देहरादून), श्री कृष्ण बल्लभ जी (बिलासपुर), श्री संजय जी मिश्रा (कानपुर), श्री सुदीप जी (फिरोजाबाद), श्री अभिषेक जी (ग्वालियर), श्री आशीष जी 'रानू' (आगरा), श्री प्रवेश जी (कानपुर), श्री आशीष सुभाष जी (आगरा), श्री हर्षमोहन जी (आगरा), श्री आलोक जी (कोटा), श्री सतेन्द्र जी (नोयडा), श्रीमती चित्रा जी (भोपाल), श्री नवीन जी (जहांगीरपुर/लखनऊ), श्री सौरभ जी (लखनऊ), श्रीमती अंजू जी (मुम्बई), श्रीमती अर्चना जी (जयपुर), श्रीमती इंदु जी (नोयडा), श्री नवीन जी (चैन्नई), श्री हितेष जी (पुरा), श्री तनुज जी चौबे (नागपुर), श्री अरूण जी (जयपुर), श्री हर्ष कमल जी (बनारस), श्रीमती अलका जी (करनाल), श्री विमल जी (नोयडा), श्री मनोज जी (सागर), श्रीमती क्षमा जी (ग्वालियर), श्री प्रवेश जी (चांपा,छ0ग0), श्री कृष्णकांत जी (हैदराबाद), श्रीमती मीता जी (कानपुर), श्री अनुराग जी 'बब्बल' (आगरा), श्री मधुपम जी (मुम्बई), श्री धनेश जी (साहिबाबाद), श्री कैलाश जी(देवास), डॉ. मीनाक्ष जी (भोपाल), श्री मुकेश गिरीश जी पाण्डे (कोलकाता), श्री गगन जी (पुरा)

स्थाई आमंत्रित:- श्री मनोज जी (बैंगलोर) , श्री पदम जी (लखनऊ), श्री अशोक जी (फरीदाबाद), श्री गिरधारी जी (जयपुर), श्री कमलेश जी रावत (कोटा), श्री विपिन जी पाण्डे (गाजियाबाद), श्री राजेन्द्रनाथ जी (प्रयागराज), डॉ. अपूर्व जी (फिरोजाबाद), डॉ. कपिल जी (आगरा), श्री अनिल जी (भोपाल), श्री अरविंद जी (दिल्ली) , श्री दिनकर राव जी (फरौली)

विशेष आमंत्रित:- श्री मधुकर जी पाठक (आगरा), श्री नीरज जी (चक्रधरपुर), श्री कौशल जी (दिल्ली), श्री अम्बर जी पाण्डे (भोपाल), श्री साकेत जी (मैनपुरी), श्री दीपक जी (लखनऊ), श्रीमती तृप्ति जी (पटना), श्री अंकुर जी (कटनी), श्री शैलेन्द्र जी (उचाड़), श्री अनुराग जी 'टिंचू' (कानपुर), श्रीमती शिखा जी पाठक (थाणे), श्रीमती अमिता जी (लखनऊ), श्री उमेश जी (बुलंदशहर), श्री ललित जी (जयपुर/नोयडा), श्री श्यामलाल जी (भिण्ड), श्री आलोक जी (जयपुर), श्री संजय जी (लखनऊ),श्रीमती मधु जी (देहरादून), श्री धर्मेन्द्र जी (कानपुर), श्री मनीष जी (इटावा), श्री पीयूष जी (पूना), श्री जितेंद्र जी (पूना), श्री मधुर जी (बैंगलोर), श्री यदुवेश जी (पुरा/लखनऊ), श्री नवीन जी (बैंगलोर), श्री दिलीप जी (हरिद्वार), श्री शैलेन्द्र जी (फिरोजाबाद), श्री प्रवीण जी (हैदराबाद), श्री नीलकमल जी (कलकत्ता), श्री मुकेश जी (तरसोखर/रिसड़ा), श्री शैलेन्द्र जी (फरीदाबाद), श्री नरेश जी (भोपाल), श्री विश्वास जी (भोपाल), श्रीमती वंदना जी (रिसड़ा), श्री प्रशांत जी (मथुरा), श्री नरेन्द्र कुमार जी चौबे (ग्वालियर), श्री भूषण जी (साहिबाबाद), श्री दुर्गेश जी (जयपुर), श्री योगेन्द्रनाथ जी (ग्वालियर), श्री अनुराग जी (गुरूग्राम), श्री विशाल जी (दानपुर) श्री प्रवीण जी 'छौना'(फरौली), श्री लोकेन्द्र (कानपुर)

मूल निवास प्रकोष्ठ:- श्री गगन जी (पुरा) संयोजक, श्री जय चतुर्वेदी नानू फरौली, श्री गोविन्द्र चतुर्वेदी (जहांगीरपुर), श्री सौरभ "आशू" (पुरा), श्री समर्थ (होलीपुरा), श्री शैलेन्द्र (फरौली), श्री मधुर (पुरा), श्री धर्मेन्द्र चतुर्वेदी (पिनाहट)।

शाखा सभा प्रकोष्ठ:- 1) ले. जन. विष्णु कांत जी नोएडा, 2)श्री विवेक जी, मुंबई 3)श्री अजय जी,लखनऊ 4)श्री अजय जी तिवारी, ग्वालियर 5)श्री सुनील जी, जयपुर 6)श्री विनय जी,कोटा 7)श्रीमती नीतिका जी, गुरुग्राम 8)श्री सुमंत जी, भोपाल 9)श्री प्रदीप जी,गाजियाबाद 10)श्री सुशील जी, फरीदाबाद 12)श्री मुकेश जी,आगरा (रजि.) 13)श्री संजय जी, अहमदाबाद 14)श्री पंकज जी, हरदोई, 15) श्री भूपेन्द्र जी, जहांगीरपुर सभा 16) श्री गौरी शंकर जी,समाज,फरौली 17) श्री महेश जी, देहली सभा 18)श्री शैलेंद्र जी, मथुरा सभा 19) श्री ऋषभ जी,देहरादून 20)श्री राजेन्द्र जी, फर्रुखाबाद सभा

युवा प्रकोष्ठ:- (1) श्री मधुपम जी- मुम्बई (संयोजक) (2) श्री खगेश जी (कोलकता) सह-संयोजक (3) श्री नवीन जी (मथुरा) (4) श्री प्रमेन्द्र जी (ग्वालियर) (5) श्री आशीष जी (कोलकाता) (6) श्री नमन जी (फिरोजाबाद) (7) श्री सुनील जी (जयपुर) (8) श्री हेमंत जी (कोलकाता) (9) श्री नमन जी (लखनऊ) (10) श्री दिवस जी (लखनऊ) (11) श्री शशांक जी (जमुआ रामगढ़)

प्रवासी भारतीय प्रकोष्ठ:- (1) श्री विवेक जी-संयोजक (मम्बई)

चिकित्सा प्रकोष्ठ:- (3) डॉ. मीनाक्ष जी-संयोजक (भोपाल)

उद्यमिता प्रकोष्ठ:- (1) प्रसून जी (भुवनेश्वर)

महासभा कार्यालय: 405/406, चिरंजीव टावर नेहरू प्लेस, नई दिल्ली 110019

।। अपनों से अपनी बात।।

● उषा चतुर्वेदी
Email : president@chaturvedimahasabha.in

आधी अधूरी बातें मन पर बोझ होती है।
किसी से कह दिया करो।
किसी की सुन लिया करो।

आदरणीय बंधुवर/भगिनी
सादर पालागन

सर्वप्रथम आप सभी लोगों को दीपावली की ढेर सारी शुभकामनाएं और बधाइयाँ। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है दीपावली के आलोकित दीपों ने आपके जीवन में नवीन उत्साह वाणी में ओज ,जोश में वृद्धि की होगी। मां लक्ष्मी सदा आप पर कृपा दृष्टि बनाए रखें।

देवउठनी एकादशी से मंगल कार्य प्रारंभ हो जाएंगे। आपके घर में भी मंगल कार्य हो इसके लिए अग्रिम बधाइयां। अभी शारदीय नवरात्रि का पर्व गया। इस बार श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के महिला प्रकोष्ठ के द्वारा भारत वर्ष के विभिन्न महानगरों में समाज की पारंपरिक लोकगीत लांगुरिया एवं भवानी माता के भजनों के वृहद कार्यक्रम आयोजित किए गए । महिला प्रकोष्ठ को बधाई इतनी सुंदर कार्यक्रम करने के लिए। महिलाओं में एक उत्साह का संचार हुआ महासभा के प्रति प्रेम और लगाव। यह कार्यक्रम अभी थमा नहीं है जो बहिने हमारी उसे समय कार्यक्रम नहीं कर पाए वह अब कर रही हैं।

मुंबई, लखनऊ, कानपुर, आगरा, ग्वालियर, भोपाल, कोलकाता, फरीदाबाद आदि नगरों में हुए कार्यक्रम की सूचना उपलब्ध हुई।

महासभा की आजीवन सदस्यता अभी भी उसी जोश और सक्रियता से हमें करनी है। भारतवर्ष के विभिन्न शहरों में शाखा सभाए गठित हैं। उन सभी शाखा सभाओं के अध्यक्ष एवं समस्त कार्यकारिणी से आग्रह है कि वह शीघ्र अति शीघ्र महासभा से सम्बदता प्राप्त कर ले। मेरा स्वयं का प्रयास है जिन स्थानों में शाखा सभाओं का गठन नहीं है उन स्थानों के बंधु आगे आकर शाखा सभा गठित कर समाज में सक्रिय भागीदारी का निर्वहन करें।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की आगामी राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक ग्वालियर में दिसंबर मास में आहुत होने वाली है। अभी से कार्यकारिणी में उपस्थित होने के लिए समय सुरक्षित कर ले। स्थान एवं दिनांक की सूचना शीघ्र ही आप लोगों को दी जाएगी। जो कार्यकारिणी सदस्य किन्हीं कारण बश दिल्ली की कार्यकारिणी में उपस्थित ना हो सके थे उनसे आग्रह है ग्वालियर की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में अपनी उपस्थिति निश्चित कर सहयोग प्रदान करें। जितने भी प्रकोष्ठों का गठन हुआ है प्रकोष्ठों के संयोजकों एवं समस्त सदस्यों से आग्रह है ग्वालियर की राष्ट्रीय कार्य कारणी की बैठक में अपने प्रकोष्ठ के कार्यक्रम की कार्य योजना बना कर लाएं। भविष्य की योजना प्रस्तुत कर उसका क्रिन्याबन भी करें। आपस में सतत संपर्क बनाकर रखें इस हेतु आज हर व्यक्ति के हाथ में मोबाइल जैसा हथियार है । अन्नपूर्णा योजना में सहयोग करने वाले बंधावों को बहुत-बहुत साधु बाद। इस बार कुछ नए लोगों को अन्नपूर्णा सहायता सूची में जोड़ा गया है तथा उन्हें अक्टूबर मास की सहायता प्रदान कर दी गई है । सदस्यता की ओर बढ़ते कदम हमारे रुके नहीं हम थमे नहीं बढ़ते जाएं। समाज में दिवंगत हुई पवित्र आत्माओं को भाव भीनी श्रद्धांजलि। अच्छा फिर मिलते हैं। आपके सुझावों के साथ । चतुर्वेदी चनद्रिका में प्रकाशित सामग्री पर आपके विचार आमंत्रित हैं। कृपया अपने सुझावों से अवगत कराते रहे ताकि चंद्रिका में और निखार आ सके।

सादर पालागन

संपादकीय

चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार में सभी का हार्दिक अभिनन्दन, सादर पालागन।

हमारा विश्वास है कि दीपावली का ज्योति पर्व आप सभी के जीवन पथ को सदैव जगमग करता रहेगा!!

संघै शक्ति कलियुगै, कलयुग में संगठन ही शक्ति है, ऐसा दृष्टांत लखनऊ चतुर्वेदी समाज ने प्रस्तुत किया – जब अपने एक बांधव के लिए चिकित्सा सहयोग हेतु लखनऊ मंडल के साथ ही कुछ बांधवों के सहयोग से आवश्यक धनराशि एकत्र हो गई, इससे सिद्ध हो गया कि रोजमर्रा में भले ही हम अलग–अलग दिखे, लेकिन आपातकाल में हम सब एक–दूसरे का सहारा बन जाते हैं,दुर्भाग्यवश बांधव को बचाया नहीं जा सका।

इसलिए कहा जाता है कि....

संगच्छध्वम्-संवदध्वम संवोमनंसि।

भावार्थः साथ में चलो, साथ में बोलो, साथ में मनाओ।

इसी भाव को जीवन्त करते हुए अक्टूबर माह में हम लोगों ने नवरात्र में शक्ति अर्जन अनुष्ठान के साथ ही दशहरा पर सद्भावना से सामाजिक कुरीतियां पर विजय प्राप्त करने का प्रयास किया है, इसके साथ ही शरद पूर्णिमा से साल का सबसे पवित्र माह कार्तिक शुरू हो रहा है, फिर करवा चौथ, धनतेरस, दीपावली, अन्नकूट, भइयादूज के बाद छठ और देव दिवाली अर्थात अक्टूबर – नवम्बर में त्योहार एवं पर्व से जीवन में उत्साह एवं उल्लास की धारा प्रवाहित होती हैं। अब हम पर निर्भर करता है कि इस प्रवाह का सदुपयोग कर अपने जीवन का लक्ष्य निर्धारित कर उसे प्राप्त करने का प्रयास करें या उदासीनता से आगामी उत्सव काल का उलाहना देते हुए जीवन को निरुद्देश्य बना दें।

यद्यदाचरथि श्रेष्ठस्तत्तदेवीति मानवः।

भावार्थः जो कुछ तुम करते हो, वही सबसे अच्छा होता है, इसलिए उसी का अनुसरण करो।

महासभा की अध्यक्षा उषा जी की प्रेरणा से नवरात्र में महिला प्रकोष्ठ ने विभिन्न शहरों में माता भजन एवं लंगुरिया आधारित संगीत – नृत्य कार्यक्रम आयोजित किए ,जो काफी सफल रहे। कुछ स्थानों पर तो जूम व यूट्यूब पर भी कार्रवाई का प्रसारण किया गया।प्रथम प्रयास होने के कारण कुछ स्थानों पर शिकायतें भी मिली, जिनसे भविष्य में बचा जा सकता है, जैसे एक पदाधिकारी ने सलाह दी कि बड़े शहरों में स्थान की कमी को देखते हुए क्षेत्रवार दो तीन जगहों पर कार्यक्रम आयोजित किया जा सकता है।

महासभा द्वारा संचालित अन्नपूर्णा योजना, छात्रवृत्ति योजना के लिए समाज द्वारा आवश्यक सहयोग राशि उपलब्ध होती है, सभी लोग मानते हैं कि आजकल मात्र दो हजार रुपए केवल एक सोच की ही पूर्ति होती हैं, इसके लिए हम सब को सामूहिक प्रयास करने होंगे। जैसे दिल्ली कार्यकारिणी मीटिंग में दीपक जी (लखनऊ) द्वारा दिए गए सुझाव कि निरन्तर रुप से सभी कार्यकारिणी सदस्य नियमित धनराशि प्रदान करें। इससे हमारी योजनाएं चलती रहेगी,लेकिन सहयोग राशि बढ़ाने के लिए समाज के समर्थ लोगों को यथासंभव एक कोष बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। लखनऊ मंडल की भांति ही हर शाखा सभा को आपात चिकित्सा कोष बनाने का प्रण लेना चाहिए क्योंकि आज मध्यम वर्ग के लिए भी बढ़ते चिकित्सा खर्चें उठाना असंभव होता जा रहा है, प्रथम तो हर परिवार को चिकित्सा वीमा लेना चाहिए, लेकिन विगत कुछ वर्षों में चिकित्सा वीमा का प्रीमियम शुक्ल पक्ष के चंद्रमा की भांति बढता जा रहा है,इन परिस्थितियों में समाज का सामूहिक सहयोग भी एक उम्मीद की किरण बनता हैं। हमारा विश्वास है कि जय समाज,जय संगठन के मंत्र को साकार करने की जिम्मेदारी हम सब मिलकर निभा सकते हैं।

विशेष –– मैं व्यक्तिगत रूप से सभी से विनम्र निवेदन करता हूं कि यदि रिपोर्ट,पत्र या लेख भेजें तो आप उस पर प्रकाशनार्थ अवश्य लिखें, यदि फोन करेंगे तो अनुग्रहित रहूंगा।। हमारे सभी विज्ञापन दाताओं एवं लेखकों का हृदयतल से धन्यवाद एवं आभार!! आप सभी को पुनः करवा चौथ, धनतेरस, दीपावली एवं देव दिवाली (कार्तिक पूर्णिमा) पर हार्दिक शुभकामनाएं !!

सप्रेम एवं सादर...

– दिलीप सिकंदरपुरिया

कार्यकारिणी बैठक (संशोधित)
दिनाँक 15 सितम्बर 2024, दिल्ली

दिनाँक 14 एवं 15 सितंबर को श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की द्वितीय बैठक दिल्ली मेंआहुत की गयी। बैठक के प्रारम्भ में सर्वप्रथम मंच प रसभापति श्रीमती ऊषा जी को सम्मान मंचासीन कराया गया। तदुपरांत बैठक में पधारे सम्माननीय संरक्षक गण श्री सतीश जी,(नागपुर), श्री भरत जी (भोपाल), श्री विकास जी,चुन्ना भैया (कानपुर), डॉ. प्रदीप जी (नोएडा), श्री कमलेश जी (नोएडा) एवं श्री देवेंद्र चौबे जी (गोंदिया), व वरिष्ठ समाजसेवी श्री त्रिभुवन जी को मंचसीन कराया गया। महासभा के सचिव श्री शशांक जी (भोपाल), संपादक श्री दिलीप जी (लखनऊ), कोषाध्यक्ष श्री ज्ञानेंद्र जी (साहिबाबाद) को भी ससम्मान मंचासीन कराया गया। कार्यकारिणी एवं प्रकोष्ठ के संयोजक एवं शाखा सभा के अध्यक्षों का औपचारिक स्वागत सत्कार होने के उपरांत बैठक विधिवत दीप प्रज्ज्वलन व कुलदेवियों की फोटो पर माल्यापर्ण के बाद एवं श्री विनोद जी एवं श्री लोकेंद्र जी (गाजियाबाद) द्वारा मंगलाचरण में प्रभु स्तुति की सुंदर प्रस्तुति के पश्चात कार्यवाही प्रारंभ की गई। संपूर्ण भारतवर्ष से पधारे कार्यकारिणी सदस्य व पदाधिकारीयों के अपना स्थान ग्रहण करने के बाद श्री मनीष जी (नई दिल्ली) ने स्वागत सत्र का संचालन प्रारम्भ किया।। सितम्बर 2024 को दिल्ली के बांधवो द्वारा आयोजित बैठक का प्रारंभ होने के पर श्री प्रदीप जी ने दिल्ली एनसीआर की ओर से विभिन्न स्थानों से पधारे सभी कार्यकारिणी सदस्यों का अभिनंदन व स्वागत किया। इसके बाद कुछ सम्मानीय विभूतियों का सम्मान महासभा की परंपरा के अनुसार किया गया। उसमें सभी सम्मानित बंधुओं में सर्वश्री ब्रज किशोर जी, श्री गोपाल कृष्ण जी, मेजर जनरल नीलेन्द्र जी, श्री देवेश जी, श्री कामेश्वर नाथ जी, श्री बाल कृष्ण जी, श्री नरेन्द्र नाथ जी को समाज रत्न सम्मान से सम्मानित कर अपनी परंपरा को कायम रखा। सचिव श्री शशांक जी ने विगत बैठक की कार्यवृत्त को सभी को अवगत कराया गया। जिसका सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। तदुपरांत डॉ. प्रदीप जी ने महासभा की 2023-24 की बैलेंस सीट सभा सम्मुख प्रस्तुत की एवं सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं को सभी को अवगत कराया। जिसका समस्त कार्यकारिणी ने करतल ध्वनि से अनुमोदन किया। उसके बाद विगत चुनाव से सम्बधित एक महत्वपूर्ण बिंदु संविधान के अनुसार प्रस्ताव डॉ.प्रदीप द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रस्ताव के अनुसार 2023-24 में संपन्न हुए चुनाव के मतपत्र जो अभी तक सुरक्षित रूप से महासभा के कार्यालय में रखे हुए हैं, को नष्ट करने हेतु रखा है। जिसे सर्वसम्मत से पारित किया गया। मत पत्रों को नष्ट करने से पूर्व वापस आए हुए 742 मत पत्रों को क्रमवार गणना कर उनको सूचीबद्ध कर ली जाए। तथा नियम के अंतर्गत श्री प्रदीप जी, श्री महेश जी श्री मुनीन्द्र जी की एक समिति गठित की गई जो इस कार्य को निष्पादन अपनी देखरेख में करेगी। उसके बाद जो मत पिछले चुनाव में पता परिवर्तन व अन्य कारणों से वापस आ गए थे, उनकी संशोधित एक सूची तैयार की जाएगी। जिससे इन सभी के शहरो के कार्यकारिणी सदस्य शीघ्र ही सभी का सही पता भेज कर उसे अभिलेखों में सही कराएंगे।

श्रीमती उषा जी सभापति ने महत्वपूर्ण बिंदु सदस्यता अभियान के निरंतर प्रगति पर अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि विगत पिछले तीन माह में सदस्यता अभियान के अंतर्गत लगभग 550 आजीवन सदस्य संख्या बनाने का महत्वपूर्ण रिकॉर्ड महासभा द्वारा पूर्ण किया गया। जिसका सदन ने करतल ध्वनि से सर्वसम्मति से पारित किया। उन्होंने इस अभियान को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए श्री आशुतोष जी,श्री संजय जी व कानपुर के सभी बांधव साथ ही मुम्बई के बांधव श्री मधुपम जी, श्री पंकज जी, श्रीमती तृप्ति जी (पटना), लखनऊ के श्री दिलीप जी, श्री सौरभ जी, श्री यदुवेश जी श्री मनीष जी, श्री अजय जी (लखनऊ) एवं अन्य बांधवों का आभार प्रकट किया। उन्होंने कहा कि इस अभियान को अनवरत जारी रखा जाए। अगली बैठक इस संख्या को दोगुना किया जाए।

श्री ऋषभ जी (देहरादून) ने आवाहन किया कि हमारी समस्त कार्यकारिणी का प्रत्येक सदस्य सर्वप्रथम स्वंय अपने परिवार को आजीवन सदस्य बनने के बाद कम से कम पांच आजीवन सदस्य जोड़कर अपना दायित्व पूर्ण करें। श्री ज्ञानेंद्र जी कोषाअध्यक्ष द्वारा तत्परता के साथ भेजी गयी राशि की रसीदभेज कर कार्य पूर्ण करने एवं सुसज्जित क्रमशः सभी की सूची को तैयार करने के लिए। सभी कार्यकारिणी सदस्यों ने अपने स्थान से खड़े होकर के उनके कार्य निष्पादन के लिए अभिवादन किया।

कुछ बॉधवों ने इस सम्बन्ध में प्रश्न प्रस्तुत किया क्या? सदस्यता फॉर्म भरकर डिजिटल फॉर्म में दिया जा सकता है। जिस पर ऊषा जी ने समाधान प्रस्तुत किया तकनीकी व विधिक कारणों के कारण बताया कि सदस्यता फार्म भौतिक रूप से ही भरकर आधार की कॉपी लगाकर फॉर्म के साथ देना अनिवार्य है। तभी

उनकी सदस्यता को मान्यता मिलेगी जिन बाँधवो की राशि तो उपलब्ध हो गई है। किंतु फॉर्म भौतिक सत्यापन के पश्चात महासभा को प्रस्तुत नहीं की गए तो उनकी सदस्यता तब तक नहीं मानी जाएगी तब तक कि वह फॉर्म प्रस्तुत न कर दें। इस अभियान को एक यज्ञ के रूप में चलाने के लिए एक समिति का गठन भी किया गया। जिसमें श्री आशुतोष जी (कानपुर) के संयोजन में श्री अंशुमान जी (जयपुर), श्री मधुपम जी (मुंबई), श्री मनीष जी (कोटा), लखनऊ से मनीष जी,दिलीप जी, अजय जी, ग्वालियर से श्री करुणेश जी,अभिषेक जी आदि रहेंगे।

देहरादून से पधारे श्री ऋषभ चतुर्वेदी जी ने प्रश्न रखा उन संस्थाओं द्वारा उनके बैनर तले हो रहे कार्यक्रम में क्या महासभा के सदस्य सम्मिलित हो सकते हैं। आदरणीय सभापति ऊषा जी ने यह कहा कि हमारे समस्त कार्यकारिणी सदस्य किसी अन्य समानांतर सभा की बैनर तले किसी कार्यक्रम में सम्मिलित होने से अपने को रोकें। यदि समाज का कोई शहर मूवी कार्यक्रम होता है होली मिलन तीज का कार्यक्रम उसमें शहर से शामिल हो ।उसके बाद चर्चा में सदस्यों ने आधार कार्ड की कॉपी को देने के विकल्प का भी प्रस्ताव किया। जिस में चर्चा उपरांत बताया कि यदि किसी की आधार की कॉपी मिलने में कठिनाई हो तो अन्य कोई आईडी जिसमें उसका नाम और डेट ऑफ बर्थ इंगित हो दिया जा सकता है क्या? इस पर सभापति जी ने कहा की आधार की फोटो कॉपी के ऊपर यह लिखकर दिया जा सकता है कि महासभा की सदस्यता हेतु प्रयोग किया जाए।

जाएगा अन्य किसी उपयोग के लिए नहीं ।कपिल जी (आगरा) ने बताया कि महासभा के अनेक पदाधिकारी व सदस्य अन्य संस्था की संवैधानिक कार्यक्रमों में हिस्सा ले रहे हैं जिस पर सभापति ने कहा की अन्य सभाओं के बैनर तले होने वाली बैठकों से अपने को दूर रखने की कोशिश करना चाहिए। उन बांधवों को कारण बताओं नोटिस प्रेषित किया जा चुका है। संविधान के अनुसार एक कमेटी गठित कर उसकी जांच की गई तथा अन्य संसाधनों से भी जानकारी प्राप्त की गई उसके प्रांत उनका कथन सत्य पाए जाने पर प्रकरण समाप्त कर दिया गया। अपने एक अन्य प्रश्न में बताया कि कुछ शहरों में एक से अधिक शाखा सभा कार्य कर रही हैं।

सभापति जी ने सभी से आग्रह किया वह हस्तक्षेप करें दोनों के पदाधिकारी को एक साथ बैठाएं और यह मतभेद दूर करे। ऐसी जानकारी प्राप्त हुई है शाखा आपस में बात करने का प्रयास कर रहे हैं। संस्था को एक करें। महासभा की आवश्यकता होगी तो महासभा तैयार है। शीघ्र आपको सूचित किया जाएगा।

सभापति की अनुमति से अन्य विषयों पर चर्चा में श्रीमती बीना मिश्रा (आगरा), श्री ललित चतुर्वेदी (लखनऊ), श्री अभिषेक चतुर्वेदी (ग्वालियर), श्री संजय मिश्रा (कानपुर), श्री आशुतोष चतुर्वेदी (कानपुर) में भाग लिया।

कुछ सदस्यों ने अधिवेशन में संविधान में संशोधन होने के बाद उन बिंदुओं को सभी को अवगत कराने के लिए विचार प्रस्तुत किया। जिससे सभापति जी बताया आपने है वेबसाइट तैयार हो रही है शीघ्र ही उसे पर आपको उपलब्ध हो जाएगी संविधान की संशोधित कॉपी प्रिंट हो कर आने के बाद शीघ्र अवगत कराया जाएगा। आदरणीय सभापति जी ने अन्नपूर्णा योजना को एक अभियान के रूप में आगे बढ़ाने के लिए सभी से आग्रह किया। इसके संबंध में श्री दीपक जी ने कहा कि प्रत्येक कार्यकारिणी सदस्य 1000/- अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत यदि देता है, तो इस अन्नपूर्णा योजना को अनवरत चलाया जा सकता है। एक अच्छी रकम एकत्र की जा सकेगी। इसके लिए सभी से विनम्रता पूर्ण आवाहन किया गया। बैठक मैं शेष बचे हुए कुछ प्रकोष्ठों का गठन किया गय। अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत सभापति जी के एक आवाहन पर 1,50,000 रुपया तत्काल एकत्रित हो गया।अन्नपूर्णा सहायतार्थ सहयोग कृष्णकांत जी (होलीपुरा/लखनऊ)-12000, धर्मेंद्र जी,(पिनाहट)/2100, सुधीर जी, नोएडा - 5100/-, श्रीमती छमा पुनीत चतुर्वेदी, ग्वालियर -2100/-, श्री नमन चतुर्वेदी - 2100/-, श्री विनोद चतुर्वेदी गुरुग्राम -5100/-, दिवस चतुर्वेदी,लखनऊ द्वारा -5100/-, श्री रूपक चतुर्वेदी, लखनऊ द्वारा- 5100/-, स्व. लक्ष्मी नारायण ठाकुर की हवेली परिवार होलीपुरा की ओर से डॉ. मनोज चतुर्वेदी (ग्वालियर) द्वारा 12000/-, श्रीमती नीतिका अभय राज चतुर्वेदी (गुरुग्राम) द्वारा- 2100/-, डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा -1100/- श्रीमती अनीता चतुर्वेदी नोएडा द्वारा -1100/-,श्री दीपक चतुर्वेदी, लखनऊ 1000/-, श्री पदम कुमार चतुर्वेदी 1000/-, डॉ. मनीष चतुर्वेदी, कोटा-1100/-, श्रीमती आभा जी (नागपुर)- 25000/- श्री अजय जी (अध्यक्ष, लखनऊ मंडल) ने भी 21,000 देने की।

श्री भरत जी संरक्षक ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए सभी से निवेदन किया की समाज में चल रही कुरीतियां सगाई समस्या व विवाहोत्तर समस्याओं को अपने ही तरीके से समाधान करें। उसके बाद श्री सतीश जी, श्री विकास जी चुन्ना कानपुर ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किये एवं सभी का आभार प्रकट किया। श्री ज्ञानेंद्र जी कोषाध्यक्ष ने सभी को अवगत कराया की आजीवन सदस्यता की सूचना/जानकारी को किस प्रकार लिखकर भेजें तथा फॉर्म के साथ भरकर भेजें। जिससे कि रसीद एवं लाइफ मेंबर नंबर आसानी से दिया जा सके। श्री संजय जी कानपुर में कहा की मैनपुरी अधिवेशन के बाद बनाए गए चतुर्वेदी चंद्रिका के सदस्यों की एक सूची प्रकाशित की जाए। जिससे यह जानकारी हो सके की सदस्यता को 5 वर्ष पूर्ण कब हो रहे हैं, क्योंकि मैनपुरी अधिवेशन के बाद चतुर्वेदी चंद्रिका की सदस्यता केवल 5 वर्ष के लिए ही मान्य है। जिससे समाज में उठने वाले प्रश्नों पर विराम लग सके।

सभापति जी ने अवगत कराया की जो आजीवन सदस्यता फॉर्म पूर्ण रूप से भरकर आएंगे उनको तीन लोगों की समिति में से किसी के पास भी भेज सकते हैं। समिति में श्री लोकेंद्र जी, श्री ज्ञानेंद्र जी (साहिबाबाद), श्री विश्वास जी व श्री शशांक जी (भोपाल) रहेंगे। ज्वालंत समस्या महासभा सूची में पता परिवर्तन के लिए अब भविष्य में सीधे डॉ. प्रदीप जी (नोएडा) संरक्षक एवं श्री ज्ञानेंद्र जी (साहिबाबाद) कोषाध्यक्ष को लिखित रूप से दे सकते हैं। चंद्रिका का पता परिवर्तन करने के लिए श्री शशांक जी को सीधे भेजा जा सकता है। इसमें भेजने वाले को पुराना पता एवं संशोधित होने वाले पते सदस्यता क्रमांक के साथ भेजना अनिवार्य है। इन समितियां को बनाने का के पीछे सिर्फ एक ही उद्देश्य है की जिससे कार्य का निष्पादन निर्विरोध पूर्ण किया जा सके। डॉ. कुश (इटावा) एवं अंशुमानजी (जयपुर) को उपाध्यक्ष के रूप में कार्यकारिणी में सम्मिलित करने पर सभी ने स्वागत किया। मूल निवासी प्रकोष्ठ में श्री गोविंद जी (जयपुर) कार्य देखेंगे एवं समस्त प्रकोष्ठों का संयोजन श्रीमती उषा जी (सभापति) एवं श्री शशांक जी (सचिव), श्री ज्ञानेंद्र जी (कोषाध्यक्ष) अपने मार्गदर्शन में करेंगे। सभापति जी ने समस्त प्रकोष्ठों के संयोजक एवं सदस्यों से अनुरोध किया की वे शीघ्र ही अपनी भविष्य की योजनाओं से उनको अवगत कराए। जिससे शीघ्र समस्त प्रकोष्ठ अपने-अपनी योजनाओं के क्रियान्वन के लिए एकजुट होकर लग जाए। इसी कड़ी में प्रवासी प्रकोष्ठ आईटी प्रकोष्ठ उद्यमिता प्रकोष्ठ का भी निर्माण किया गया। जिसमें सर्वश्री ज्ञानेंद्र जी आई.टी. व श्री प्रसून जी (भुवनेश्वर) एवं श्री अजय चौबे भोपाल उद्यमिता प्रकोष्ठ का कार्य देखेंगे। इसी कड़ी में बहु प्रतीक्षित महिला प्रकोष्ठ का भी गठन किया गया। जिसमें श्रीमती शिवांगी चतुर्वेदी,संयोजक,श्रीमती अनुपमा जी (उप संयोजक) व श्रीमती आभा चौबे नागपुर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रभारी रहेगी।महिलाओं के लिए विभिन्न प्रकार के आयोजन एवं उनकी भागीदारी को सुनिश्चित करेंगे। भविष्य में श्रीमती नीमा जी महिला प्रकोष्ठ की सदस्य, श्री लोकेंद्र जी (कानपुर) को विशेष आमंत्रित कार्यकारिणी का हिस्सा बना के लिए सभी कार्यकारणी से सहमति प्रदान की ।

इसके बाद कमलेश जी के संक्षिप्त उद्बोधन के बाद श्री सतीश जी संरक्षक ने विस्तृत रूप से अपनी भविष्य की कार्य योजनाओं के लिए अपनी ओजस्वी वाणी से सभी के मनोबल को ऊपर उठाया। उन्होंने कहा कि जल्द से जल्द कार्यकारी में अधिकांश महिला एवं युवाओं को स्थान दिया जाना चाहिए। श्री सतीश जी ने कहा की पालागन शब्द का कोई अन्य शब्द स्थान नहीं ले सकता। उन्होंने कहा की कोई कितना भी जतन कर ले, हमारे पूर्वजों की बनाई हुई महासभा जिसकी नीव हमारे बुजुर्गों ने बड़े ही जतन व परिश्रम से उन विपरीत परिस्थितियों में रखी हो। उसका कोई भी अन्य संस्था कुछ नही बिगाड़ सकती। उन्होंने सभी से आवाहन किया कि आप सभी निसंकोच निडर होकर के अपना कार्य करें। वह चुनाव हो या कुछ और सिर्फ महासभा में ही दिखाई देती है। जितने पारदर्शित तरीके से हम हमारा चुनाव होता है, चुनाव की प्रक्रिया होती है, सभी को सदस्य बनने के लिए समय से अवगत कराया जाता है। जिसके लिए अन्य समाज हमारा उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जिन्होंने चारों वेदों को जीवंत रखा वह चतुर्वेदी कहलाए। हमें गर्व है अपने माथुर चतुर्वेदी समाज पर अपनी संस्कृति पर उन्होंने कहा आप सब अपनी ताकत को पहचानों। तुम सब हनुमान हो समाज को जोड़ने का काम अनवरत करते रहना। अपनी ताकत बढ़ाओ कभी भी हतोत्साहित नहीं होना। आपने अगली भव्य बैठक मथुरा में आयोजित होने करने की सूचना दी। उन्होंने कहा हमको अपने माथुर चतुर्वेदी परिवारों की जनगणना के माध्यम से अपनी कार्य योजना को आगे बढ़ाने के लिए सभी का दायित्व है। और उनकी मदद से इस एक लक्ष्य को पूर्ण किया जाए समाज के बच्चों को जॉब के लिए मार्ग प्रशस्त करना हमारी प्राथमिकता रहेगी। चेन्नई से आए श्री नवीन जी ने कहा समाज को आज के महंगाई के दौर में मेडिकल सुविधा के ऊपर भी एक कार्य योजना बननी चाहिए। जिसके अंतर्गत सभी को आकस्मिक मेडिकल सुविधा प्रदान की जा सके तथा युवाओं को जोड़ने के लिए भी महासभा को प्रयास करना चाहिए। उन्होंने आश्वासन दिया की चेन्नई में किसी भी प्रकार की ऐसी मजबूरी आने पर उनका योगदान सर्वप्रथम रहेगा। बैठक के अंत में सच्चे श्री शशांक चतुर्वेदी ने सभी का आभार व्यक्त किया वह इस सुरुचि पूर्ण सुंदर व्यवस्था के लिए दिल्ली के आयोजन कर्ताओं डॉ.प्रदीप जी, श्री मुनीन्द्र जी, श्री ज्ञानेंद्र जी, श्री लोकेंद्र जी, श्री मनीष जी, श्री विमल जी का भी आभार व्यक्त किया गया।

बैठक के अंत में विगत बैठक से वर्तमान बैठक के बीच में दिवंगत सभी बांधवों को 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। इसके बाद बैठक आगामी बैठक अनिश्चितकाल तक के लिए स्थागित कर दी गई।

विवरण प्रस्तुति
शशांक चतुर्वेदी (सचिव)
आशुतोष चतुर्वेदी (सह-सचिव)

दीपावली का प्रारंभ दिवस धनतेरस

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी भोपाल

धनतेरस भारत में मनाए जाने वाला एक विशेष पर्व है यह पर्व दीपावली के 2 दिन पूर्व आता है क्योंकि दीपावली 5 दिन का भारतीय त्योहार है धनतेरस के दिन से ही दीपावली का शुभ आरंभ माना जाता है। भारतीय परंपराओं और मान्यताओं के अनुसार धनतेरस के दिन सोने चांदी के आभूषण खरीदना बहुत शुभ माना जाता है।

कब मनाया जाता है

धनतेरस कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि के दिन मनाया जाता है इस दिन अर्थात धनतेरस को भगवान धन्वंतरी का जन्म हुआ था इसलिए इस तिथि को धनतेरस अथवा धनत्रयोदशी के नाम से भी जाना जाता है भगवान धन्वंतरी के दिवस होने के कारण भारत सरकार ने इसे राष्ट्रीय आयुर्वेदिक दिवस के रूप में मान्यता प्रदान की है। भगवान धन्वंतरी आयुर्वेद के जनक माने जाते हैं। जब असुरों के के साथ मिलकर देवताओं ने समुद्र का मंथन किया था उस समय भगवान धन्वंतरी समुद्र में से अमृत कलश हाथ में लेकर तथा आयुर्वेद हाथ में लेकर प्रकट हुए थे तथा 2 दिन के बाद लक्ष्मी जी समुद्र मंथन से प्रकट हुई थी इसलिए धनतेरस के 2 दिन बाद दीपावली के त्यौहार के दिन माता लक्ष्मी की पूजा अर्चना की जाती है।

धनतेरस कैसे मनाएं

धनतेरस के दिन भगवान कुबेर की पूजा की जाती है भगवान कुबेर धन दौलत के स्वामी हैं तथा कुबेर जी की कृपा सदा मिलती रहे इसलिए इनकी पूजा-अर्चना की जाती है धनतेरस एक ऐसा त्यौहार है जिस दिन मृत्यु के देवता यमराज की पूजा भी की जाती है तथा कहीं-कहीं पर धनतेरस के दिन ही दीपावली पूजन के लिए माता लक्ष्मी और गणेश जी की प्रतिमा खरीद कर स्थापित की जाती है।

कुछ मान्यताएं

वैसे तो कभी भी किसी की आलोचना बिना कारण नहीं करनी चाहिए लेकिन धनतेरस के दिन इस बात का विशेष ध्यान रखें कि हम किसी से विवाद ना करें किसी की आलोचना ना करें और ना सुने। साथ ही प्रातः काल घर में भजनों की ध्वनि आनी चाहिए भजनों की ध्वनि से घर से नकारात्मक शक्तियां बाहर निकल जाती हैं तथा अपना मन निर्मल एवं स्वस्थ हो जाता है हम सकारात्मक सोचने लगते हैं। कुछ विशेष मान्यताएं हैं जोकि लोग मानते हैं धनतेरस के दिन नमक जरूर खरीदना चाहिए धनतेरस के दिन हम जो नमक खरीद कर लाए उस नमक का प्रयोग दीपावली के पांचों दिनों के त्योहार में प्रयोग करें एक कटोरी ले एक कटोरी लें और उसमें थोड़ा सा नमक जाले ध्यान रहे कटोरी प्लास्टिक की ना हो चाहे किसी भी धातु की हो तथा उस कटोरी को उत्तर पूर्व की दिशा में रख दें ऐसा करने से

सफलता आपके चरण चूमेगी घर में धन धन की वृद्धि होगी ऐसा करने से घर में वैभव तथा शांति होती है। अपने दाने हाथ के लिए चांदी का एक कड़ा बनाएं तथा दीपावली पर उसका पूजन माता लक्ष्मी के सामने रखकर करें तथा दीपावली के दूसरे दिन प्रातः उसे दाहिने हाथ में धारण कर ले यदि पूर्व से ही कड़ा बना हो तो उसे साफ कर दीपावली को पूजन कर धारण करें

ये कार्य अवश्य करे

धनतेरस के दिन 13 दीपक द्वार पर अवश्य जलाएं। एक दीपक चार बाती वाला बनाएं इसमे एक कोड़ी तथा एक सिक्का डाले तथा दाहिने हाथ की तरफ रखें इसे यम दीपक कहते हैं।

दान करे

एक मुट्ठी चावल ले और ध्यान रहे चावल टूटे ना हो जितने चावल ले उतनी ही शक्कर ले आठ लोंगे हो फूल वाली 1 का सिक्का माता लक्ष्मी के सामने लाल कपड़ा बिछाए लाल कपड़ा ना हो तो लाल कागज ले ले लेकिन यह जमीन पर न रखें किसी थाली में या किसी और अन्य वस्तु पर रखें जो हमारे पास चावल हैं उन चावल का बाई तरफ स्वास्तिक बनाएं तथा उसके ऊपर एक सिक्का रखें दाहिने हाथ की ओर शक्कर से ओम की आकृति बनाएं लाल फूल अर्पित करें तथा दीपावली के बाद इसे किसी मंदिर में पोटली में बांधकर दान करें यदि दूसरे दिन दान ना कर पाए तो 11 में दिन शुक्रवार को यह पोटली दान करें यह प्रक्रिया धनतेरस को शाम के समय अमृत काल में करें

खरीददारी

धनतेरस के दिन खरीददारी करना शुभ माना जाता है लेकिन प्रायः देखा जाता है ग्रहणी को जिस वस्तु की आवश्यकता होती है वह वही धनतेरस को खरीद लेती है यह उचित नही है सोना चांदी खरीदना शुभ होता है यदि वो ना खरीदे तो बर्तन खरीदे

यह कदापि ना खरीदें

1) लोहे की बनी वस्तुएं यह नकारात्मक प्रभाव डालती हैं।

2) कांच या कांच से बनी वस्तुएं

कांच का संबंध राहु से होता है और राहु नीच ग्रह में आता है।

3) एलमुनियम की बनी वस्तुएं

यह भी अशुभ मानी जाती हैं। क्योंकि इससे बनी वस्तुए पूजा में प्रयोग नही होती।

4) ये दुभाग्य का प्रतीक है

राशि के अनुसार क्रय करे

मेष राशि तांबे की धातु की बनी वस्तुएं खरीदें।
वृषभ–चमकदार पांलिस वाली वस्तुए या हीरे के आभूषण
मिथुन : काँसे के बर्तन
कर्क : चांदी के बर्तन
सिंह : ताँबे या गोल्डन पालिस वाली वस्तुए
कन्या : काँसे के बर्तन
तुलाः बिजली का सामान
वृश्चिक : ताँबे सोने केआभूषण
धनु : पीतलबर्तन सोने के आभूषण
मकर : बिजली का सामान शनि स्वामी है
कुम्भ : मिश्चित धातु के बर्तन
मीन : पीतल तथा सोना चांदी

दिवाली पर लक्ष्मी के साथ गणेश पूजन

- शालिनी, लखनऊ

गणेश भगवान को विघ्नहर्ता माना जाता है, यानी वह सभी बाधाओं और चुनौतियों को दूर करने में मदद करते हैं। लक्ष्मी पूजन से पहले गणेश पूजन करने से यह सुनिश्चित होता है कि पूजा और प्रार्थना बिना किसी बाधा के सफलतापूर्वक संपन्न हो।

गणेश को बुद्धि और ज्ञान का देवता माना जाता है, और लक्ष्मी के साथ उनकी पूजा करने से यह सुनिश्चित होता है कि हमारे जीवन में धन और समृद्धि के साथ–साथ बुद्धि और ज्ञान भी बना रहे। गणेश और लक्ष्मी दोनों को सुख और समृद्धि के देवता माना जाता है, और उनकी संयुक्त पूजा करने से यह सुनिश्चित होता है कि हमारे जीवन में सुख और समृद्धि बनी रहे।

इसके अलावा, हिंदू पौराणिक कथाओं में गणेश को उनकी माता पार्वती के द्वारा बनाया गया माना जाता है, और लक्ष्मी को भगवान विष्णु की पत्नी माना जाता है। इस प्रकार, गणेश और लक्ष्मी की पूजा करने से यह सुनिश्चित होता है कि हमारे जीवन में परिवारिक सुख और समृद्धि बनी रहे।

सतयुग व त्रेतायुग में दिवाली

- कनक चतुर्वेदी (होलीपुरा/कोलकाता)

सनातन धर्म में परम्परा एवं प्रथा प्रायः लिखित न होने के कारण वर्षो के अंतराल पर विभिन्नता विकसित हो जाती है, वैसे तो वेदों, पुराणों, उपनिषद् में हर क्षेत्र में आधुनिक विज्ञान से भी अधिक ज्ञान का भंडार है, चाहे शल्य चिकित्सा हो या राम –रावण युद्ध हो या महाभारत युद्ध में मंत्र जनित शस्त्र, किसी भी तरह आधुनिक मिसाइल या डिजिटल शस्त्रों से कम नहीं थे। शायद शास्त्र सामान्य जन से दूर ही रहें, फिर गुलामी काल के कारण हम अपने शस्त्र एवं शास्त्र से परिचित नहीं हो सके।। परिणामस्वरूप आजकल कांवेंट में पढ़ते बच्चे यह दो प्रश्न अवश्य पूछते हैं पहला –– जब दीपावली भगवान राम के 14 वर्ष के वनवास से अयोध्या लौटने की खुशी में मनाई जाती है तो दीपावली पर लक्ष्मी पूजन क्यों होता है ?? राम और सीता की पूजा क्यों नही ??दूसरा प्रश्न –– दीपावली पर लक्ष्मी जी के साथ गणेश जी की पूजा क्यों होती है, विष्णु भगवान की क्यों नहीं ??

वैदिक परम्परा एवं प्रथा से अनभिज्ञ अभिभावक भी इन प्रश्नों का उत्तर नहीं जानते हैं। अधिकांशतः बच्चों को तार्किक उत्तर नहीं मिल पाता और जो मिलता है उससे बच्चे संतुष्ट नहीं हो पाते!!

हम सबको जानना चाहिए कि दीपावली का उत्सव दो युग –– सतयुग और त्रेता युग से जुड़ा हुआ है !!

सतयुग में समुद्र मंथन से माता लक्ष्मी कार्तिक अमावस्या के दिन प्रगट हुई थी, इसलिए लक्ष्मीजी का पूजन होता है।।

भगवान राम भी त्रेता युग में कार्तिक अमावस्या के दिन ही अयोध्या लौटे थे तो अयोध्या वासियों ने घर घर दीपमाला जलाकर उनका स्वागत किया था।इसलिए इसका नाम दीपावली है !!

अतः इस पर्व के दो नाम है लक्ष्मी पूजन जो सतयुग से जुड़ा है, दूसरा दीपावली जो त्रेता युग प्रभु राम और दीपों से जुड़ा है !!

लक्ष्मी– गणेश का आपस में क्या रिश्ता है

और दीवाली पर इन दोनों की पूजा क्यों होती है ??लक्ष्मी जी सागरमन्थन में मिलीं, भगवान विष्णु ने उनसे विवाह किया और उन्हें सृष्टि की धन और ऐश्वर्य की देवी बनाया गया!!

लक्ष्मी जी ने धन बाँटने के लिए कुबेर को अपने साथ रखा। कुबेर बड़े ही कंजूस थे, वे धन बाँटते ही नहीं थे।वे खुद धन के भंडारी बन कर बैठ गए। माता लक्ष्मी खिन्न हो गईं, उनकी सन्तानों को कृपा नहीं मिल रही थी। उन्होंने अपनी व्यथा भगवान विष्णु को बताई।।

भगवान विष्णु ने कहा कि तुम कुबेर के स्थान पर किसी अन्य को धन बाँटने का काम सौंप दो !! माँ लक्ष्मी बोली कि यक्षों के

राजा कुबेर मेरे परम भक्त हैं उन्हें बुरा लगेगा।।तब भगवान विष्णु ने उन्हें गणेश जी की विशाल बुद्धि को प्रयोग करने की सलाह दी। माँ लक्ष्मी ने गणेश जी को भी कुबेर के साथ बैठा दिया। गणेश जी ठहरे महाबुद्धिमान तो वे बोले, माँ, मैं जिसका भी नाम बताऊँगा ।उस पर आप कृपा कर देना, कोई किंतु परन्तु नहीं। माँ लक्ष्मी ने हाँ कर दी।अब गणेश जी लोगों के सौभाग्य के विघ्न, रुकावट को दूर कर उनके लिए धनागमन के द्वार खोलने लगे।कुबेर भंडारी देखते रह गए।गणेश जी कुबेर के भंडार का द्वार खोलने वाले बन गए। गणेश जी की भक्तों के प्रति ममता कृपा देख माँ लक्ष्मी ने अपने मानस पुत्र श्रीगणेश को आशीर्वाद दिया कि जहाँ वे अपने पति नारायण के सँग ना हों, वहाँ उनका पुत्रवत गणेश ही उनके साथ रहें ।।दीवाली आती है कार्तिक अमावस्या को, भगवान विष्णु उस समय योगनिद्रा में होते हैं, वे जागते हैं ग्यारह दिन बाद देव उठनी एकादशी को। माँ लक्ष्मी को शरद पूर्णिमा से दीवाली के बीच के पन्द्रह दिनों में पृथ्वी भ्रमण करना होता हैं। इसलिए मां लक्ष्मी अपने मानस पुत्र गणेश जी को भ्रमण पर अपने साथ ले जाती है।इसलिए दीवाली को लक्ष्मी–गणेश की पूजा होती है।।

त्रेतायुग में भगवान राम दशहरा पर रावण पर विजय प्राप्त कर मां सीता और लक्ष्मण के साथ कार्तिक अमावस्या के दिन ही अयोध्या लौटे तो वहां घर–घर दीपक जलाकर आतिशबाजी कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की थी।।

इसलिए दिवाली पर लक्ष्मी–गणेश पूजन के साथ दीपमाला की रोशनी के साथ आतिशबाजी की जाती हैं।।

जयश्री गणेश–जय श्री राम

धन दान का रहस्य

- बीना मिश्रा, आगरा

एक बार सौराष्ट्र देश के राजा धर्म वर्मा ने धन दान का रहस्य जानने के लिए बहुत काल तक तप किया। तब उन्हें आकाशवाणी से एक श्लोक सुनाई दिया ।

द्वि हेतु छः अधिष्ठान च द्वि पाक मुक्।
चतुष्प्रकारं त्रिविधं विनाशं दानमुच्यते।।

राजा को इसका शब्दशः अर्थ समझ में नहीं आया। उन्होंने ढिंढोरा पिटवाया कि कोई संत तपस्वी या विद्वान हमें इस श्लोक का अर्थ बता सके तो मैं अनुग्रहीत रहूंगा और शक्ति के अनुसार धन दौलत व पृथ्वी का दान दूंगा ।

नारद जी को पता चला तो वे राजा के पास आये। राजा ने उत्सुकतावश पूंछा कि हे ऋषिवर! दान के दो हेतु,छः अधिष्ठान छः अंग,दो फल,चार प्रकार, तीन विधियाँ क्या हैं? और दान का विनाश करने वाले तीन क्या हैं?

ऋषिवर नारद जी ने समाधान देते हुए बताया।

दान के दो हेतु- श्रद्धा और शक्ति हैं । श्रद्धा के बिना किया गया दान फलित नहीं होता। अतः दानदाता को श्रद्धालू होना आवश्यक है।

शक्ति से तात्पर्य है- स्वयं के व परिवार के भरण-पोषण के बाद जो धन बचता है वही दान के उपयुक्त है,मधु के समान मीठा व वास्तविक फल देने वाला हैं । इसके विपरीत करने पर दिया गया दान विषतुल्य व हानिकारक हो जाता है। दाता का धर्म अधर्म में परिवर्तित हो जाता है।

छः अधिष्ठान- 1.धर्म 2.अर्थ 3.काम 4.लज्जा 5.हर्ष और 6.भय हैं।

1. **धर्म दान** - मन में बिना किसी प्रयोजन के तथा बिना किसी फल की आशा से धर्म पूर्वक धन का दान धर्म दान कहलाता है।
2. **अर्थ दान** - मन में किसी प्रयोजन को रखकर दिया गया या किसी फल की आशा में दिया गया दान अर्थ दान होता है। जैसे किसी बड़े संकल्प की सिद्धी होने पर।
3. **काम दान** - किसी बड़ी कामना के पूरे होने पर दिया गया दान कामदान है।
4. **लज्जा दान** -भरी सभा में याचकों के मांगने पर अपनी लज्जा बचाने के लिए किया गया दान लज्जा दान होता है।
5. **हर्ष दान** - किसी बड़ी उपलब्धि प्राप्त होने पर किया गया दान हर्ष दान होता है। जैसे विजयोत्सव, पुत्र जन्म आदि तथा
6. **भयदान** - किसी अनिष्ट की निवृत्ति के लिए किया गया दान भय दान होता है। जैसे शनि राहु केतु आदि ग्रहों की शांति के लिए किया गया दान।

छः अंग -दाता, प्रतिग्रहीता, धर्म युक्त, देयवस्तु, देश और काल।

दाता- निरोगी, सात्विक बुद्धिवादी,श्रद्धालु और धर्मात्मा होना चाहिए।

प्रतिग्रहीता - दान लेने वाला शुद्ध, सच्चरित्र, विद्वान, संयमी, उत्तम कुल और आचार-विचार से दयालु होना चाहिए।

दान की वस्तु न्यायोचित ढंग से अर्जित की गई हो। वह वस्तु देश और काल के अनुरूप होनी चाहिए।

महात्माओं ने बताया है कि धन दान से दो फल प्राप्त होते हैं।

1.इस लोक में शुभता और 2.परलोक में कल्याण का मार्ग प्रशस्त होता है।

दान के चार प्रकार- 1.ध्रुव. 2.त्रिक 3.काम्य और 4.नैमित्तिक

1. **ध्रुव दान** - कुआ -बाबडी, बाग-बगीचा,पार्क बनवाना ,धर्मशालाएं बनवाना, यज्ञों का आयोजन करना वृक्षारोपण करना आदि सार्वजनिक कार्यों में धन लगाना ध्रुव दान कहलाता है।
2. **त्रिक दान**- नित्य प्रति दिये जाने वाले दान त्रिक दान कहे जाते हैं।जैसे गाय व कुत्ते की रोटी ,चीटियों को आटा डालना आदि।
3. **काम्य दान** - किसी कामना की पूर्ति हेतु किया गया दान काम्य दान कहलाता है ।जैसे बच्चों के वार्षिक परीक्षा में सफल होने पर, या किसी प्रतियोगी परीक्षा में चयनित होने पर।
4. **नैमित्तिक दान** - संक्रांति काल,सूर्य ग्रहण/चंद्र ग्रहण काल, श्राद्ध कर्म, बच्चों के संस्कार निर्माण संबंधी कार्यों में दिया गया दान-ये सभी नैमित्तिक दान की श्रेणी में आते हैं।

दान की उत्तम, मध्यम और कनिष्ठ तीन विधियां हैं।

घर ,मंदिर ,विद्या, गौ,भूमि, कूप ,स्वर्ण और प्राण इन आठ वस्तुओं का दान उत्तम कहा गया है। महर्षि दधाचि का अस्थि दान हम सभी को पता है। अन्न,वस्त्र, अश्व आदि का दान मध्यम तथा जूता, छाता, बर्तन, दही, मधु, दीपक और पत्थर का दान कनिष्ठ कहा गया है। दान के विनाश के तीन कारण- पश्चाताप, कुपात्रता और अश्रद्धा है। इन परिस्थियों में दान देने से कोई शुभ फल नहीं होता।

शुभम अस्तु

'शारदीय नवरात्र की सुवास पूर्वोत्तर से'

- कुंकुम चतुर्वेदी, लखनऊ

शाम घिरने लगी थी,आस-पास के पंडालों से मां के जयकारे गूंजने लगे थे। लंबे ट्रैफिक जाम से जूझते हुए हम लोग एक विशाल दुर्गा पंडाल में पहुंचे। लुभावनी झांकी ,सुसज्जित परिसर,प्रसाद के लिए पर्ची कटाते भक्त गण। आधुनिक ड्रेसेस में सजी षोडशियाँ और बालों के सुनहरे फुग्गे उड़ाते नवयुवा। अंदर ही अंदर मन में कुछ चटक गया। सब कुछ है यहां पर कुछ ऐसा जिसका नितांत अभाव है। शायद भक्ति का पावन सरल भाव।

सहसा मन में वर्षों पूर्व की वो झांकी कौंध जाती है। जिसमें मनुष्य ही नहीं प्रकृति भी मां के स्वागत को आतुर हो उठती थी। चारों ओर हरे कटावदार पत्तों के बीच लाल जवा के फूलों की रक्तिम कतार,पारिजात के नन्हें पुष्पों की चादर और सूर्य के अवसान के साथ गूंजता घंटी पोका का स्वर। (घण्टी का स्वर निकालता कीट) मानो मंदिर की ढेरों घण्टियाँ एक साथ टनटना उठी हों। पूजा शुरू होते ही जन मानस में एक उल्लसित स्फूर्ति दिखने लगती। आज के तो बोनस पाएगा कहती कदम बढ़ाती, खिलखिलाती युवतियां, युवक,प्रौढ़ और वृद्ध। व्यवसायी वर्ग पहले से आकर अपनी दुकानें फैक्टरी के परिसर में सजा लेते। कहीं लाल पाड़ की साड़ी लहरा रही है तो कहीं चटख रेशमी नीली साड़ी का चमकीला दामन, खटर-खटर घूमते खिलौने, चाभी लगते ही मुंह खोलता तोता और गरदन मटकाती गुड़िया मानो रंगों का इंद्रधनुष छा गया हो। बोनस मिलने की खुशी श्रमिक वर्ग के तन-मन से मानो झर-झर झरती दिखती। उस वांछित राशि से जाने कितने सपने जुड़े थे। किसी को बेटी के ब्याह के लिए बिंदी ,टिकुली, झुमकी लेनी है, किसी को खपरैल की छत ठीक करानी है तो किसी को महाजन का कर्जा चुकाना है पर कुछ भी हो ' सात दिन के लिए नया कपरा, चुपरा तो लगेगा ही उसमें कोई कोताही नहीं होनी चाहिए । वो बात अलग है कि व्यवसायी इन भोले श्रमिकों से दुगनी कमाई कर लेता था।

चाय बागान के विस्तृत प्रांगण में भव्य पंडाल तक जाने का रास्ता रंग बिरंगी झंडियों से सज जाता। नारंगी रंग की जलेबियाँ, मिर्ची के पकोड़े, घुघनी और रंगीन शरबत के गिलास। बहुत दूर से सुनाई देती शंख की गूंज और स्त्रियों की उलूक ध्वनि। जिधर देखो रंगों का आकाश उमड़ा दिखता। नए कपड़ों की गमक और सस्ते इत्र की सुगंध भी मोहाविष्ट कर देती।

अधिकांश बंगाली परिवारों से घिरे हम लोग भी इस उत्साह के भागी बन जाते। हमारी प्रतिवेशिनी का उत्साह देखते बनता तुम हमको बताएगा कि दिल्ली में कैसा साड़ी चल रहा है? उनके लिए सब उत्तर भारतीय दिल्ली के थे। और दिल्ली के फैशन की बात ही कुछ और है। बीच – बीच में ऐसी शिकायतें भी सुनने को मिलती, ओ कोने वाले बंगले वाली चार ठौ साड़ी कीन(खरीद) लिया और हमारा मिस्टर दो ठौ ही ले के दिया। अब सात दिन का तो कपरा चुपरा लगेगा न शॉपिंग के लिए दूर सिलचर जाना होता था। जाने वाले दिन घरनी का उत्साह देखते ही बनता ।पुरुष भी अपने बटुए का मुख खुला ही रखते। शाम को उनके लौटने का उत्साह उनसे ज़्यादा हमें होता। हमारे बाहुबली पलंग पर खरीदे हुए कपड़ों की छटा बिखर जाती।मिसेज भट्टाचार्य निकली नहीं कि मिसेज मुखर्जी थैला लिए हाजिर। कोई दुराव ,छिपाव नहीं तुमि बोलेगा अच्छा तो आमि रखेगा नहीं तो वापस कर देगा कहतीं वो भली स्त्रियां। कपड़े, क्रॉकरी सब अपने घर पहुँच जाते पर हमारे घर वो सुगंध बस जाती।

इसके साथ ही याद आती है पूजा पंडाल में छाई वो लोबान की गंध और घुनुची नृत्य पर हिलोर लेते प्रतियोगी। मंडप की अनूठी कला में कभी मोर के पंखों से कभी बांस के छिलकों से बनी दिव्य मूर्तियां दिखतीं। कारीगरी ऐसी कि देखते रह जाओ। सबसे प्रबल था जनमानस का भावात्मक पक्ष। मां के श्री चरनों में नत युवतियों के मुख का कोमल भाव और भीगी चने की दाल के साथ मीठी बुंदिया के प्रसाद को केले के पत्ते पर पकड़े युवक का उद्भासित मुखमंडल।

रात भर प्रांगण में दो – दो फिल्मों के शो चलते । दरी ,चटाई ले जाते श्रमिक रात भर खुले आकाश के नीचे बिताते। इन सात दिनों में न काम की चिंता न खाना बनाने की। प्रसादी छक कर खाने का संतोष छलकता रहता। सच पूछा जाए तो प्रसाद में बनी उस खिचड़ी या घुघनी ,लूची का अनुपम स्वाद आज भी जिव्हा पर है। आप इसे नॉस्टेल्जिया कह सकते हैं किंतु जिस तरह रसखान को कालिंदी कूल, कदंब की डालें और ब्रज लुभाता था वैसे ही दुर्गा पूजा हो या लख्खी पूजा हमें पूर्वोत्तर की वो हरित धरा अपनी ओर खींचने लगती है। आज दुर्गा पूजा से लौटते हुए वही शंख ध्वनि बुलाती सी प्रतीत हो रही है।

जायका-स्वाद का

नारियल बर्फी

सामग्री -- दो कप कद्दूकस किया ताजा नारियल,50 ग्राम गुड़,02 कप भीगी चना दाल,02 कप रोस्टेड काजू,1/4 चम्मच हरी इलायची पाउडर,03चम्मच देशी घी,01 चुटकी केसर,01छोटा टुकड़ा रिफाइंड कपूर।

विधि -- एक नानस्टिक कढ़ाई में घी गरम करें, इसमें भिगोई हुई चना दाल को 5 मिनट मंद आंच पर भूनें।जब घी कढ़ाई घी छोड़ने लगे,तब इसमें कद्दूकस किए नारियल को मिक्स करके पांच मिनट के लिए भूनें। फिर इसमें गुड़, केसर और इलायची पाउडर डालें।जब गुड़ पूरी तरह पिघल जाए तो इसमें रोस्टेड काजू को मिक्स कर लें।अब एक एलुमिनियम ट्रे में घी लगाकर पूरे मिश्रण को इकसार फैलाएं । फिर एलुमिनियम फाल का रेक्टेंगल बना कर रख दें,अब इसके ऊपर कपूर रखकर जलाकर मिश्रण पर रख दें,अब एक अन्य फाल से पूरे मिश्रण को ढक दें। लगभग 30 सेकेंड बाद कपूर को हटा कर नारियल बर्फी को फ्रिज में रख दें।जब बर्फी मिश्रण सेट हो जाएं तो इसे मन चाहे आकार में काट कर सर्व करें।

- विभा अतुल, लखनऊ

***

छेना रसगुल्ला

सामग्रीः - 1 लीटर दूध
- 1/2 कप लेमन जूस या विनेगर
- 1/2 कप चीनी
- 1/4 कप खजूर गुड़
- 1/2 कप पानी
- इलायची, केसर,पिस्ता पाउडर (वैकल्पिक)

विधिः 1. दूध को उबालें और लेमन जूस या विनेगर मिलाकर छेना बनाएं।

2. छेना को एक कपड़े में बांधें और अतिरिक्त पानी निकालें।

3. छेना को मैश करें और चीनी, गुड़, और पानी मिलाकर एक मिश्रण बनाएं।

4. मिश्रण को एक पैन में गरम करें और गाढ़ा होने तक पकाएं।

5. मिश्रण को एक प्लेट में डालें और ठंडा होने तक रखें।

6. ठंडा होने के बाद, मिश्रण को छोटे गोले में बांट लें।

7. एक पैन में चीनी और पानी मिलाकर शीरा बनाएं।

8. गोलों को शीरा में डालें और 10-15 मिनट तक पकाएं।

9. इलायची पाउडर (यदि उपयोग कर रहे हैं) मिलाएं।

10. रसगुल्ला को परोसें और आनंद लें!

- अंजलि चतुर्वेदी, गोंडा

***

काजू बादाम बर्फी

सामग्रीः - 1 कप काजू
- 1 कप बादाम
- 1 कप चीनी
- 1/2 कप खोया या मावा
- 1/4 कप घी या मक्खन

– 1 चुटकी इलायची पाउडर
– 1 चुटकी केसर (वैकल्पिक)

विधिः 1. काजू और बादाम को बारीक पीस लें।

2. एक पैन में चीनी और 1/2 कप पानी मिलाकर गरम करें और चीनी को पिघलाएं।

3. खोया या मावा को गरम चीनी के मिश्रण में मिलाएं और लगातार चलाते रहें।

4. काजू और बादाम का पिसा हुआ मिश्रण मिलाएं और अच्छी तरह मिलाएं।

5. घी या मक्खन मिलाएं और मिश्रण को गाढ़ा होने तक पकाएं।

6. इलायची पाउडर और केसर (यदि उपयोग कर रहे हैं) मिलाएं।

7. मिश्रण को एक ग्रीस्ड प्लेट में डालें और ठंडा होने तक रखें।

8. ठंडा होने के बाद, बर्फी को काट लें और परोसें।

नोटः आप इस बर्फी को अधिक स्वादिष्ट बनाने के लिए किशमिश, पिस्ता या अन्य ड्राई फ्रूट्स भी मिला सकते हैं।

– **सुगंधा चतुर्वेदी,** लखनऊ

***

पनीर मलाई समोसा

सामग्रीः – 2 कप मैदा
– 1/2 कप घी
– 1/4 कप पानी
– 1/2 कप पनीर, क्रम्बल किया हुआ
– 1/4 कप मलाई
– 1/4 कप चीनी
– 1/4 चम्मच ड्राइ फ्रूट्स,इलायची पाउडर
– तेल या घी तलने के लिए

विधिः 1. मैदा और घी को मिलाकर एक मिश्रण बनाएं।

2. पानी मिलाकर आटा गूंथ लें।

3. आटे को 10–15 मिनट तक रखें।

4. आटे को छोटे गोले में बांट लें।

5. पनीर, मलाई, चीनी, और इलायची पाउडर को मिलाकर एक मिश्रण बनाएं।

6. आटे के गोले को बेलकर मिश्रण भरें।

7. समोसे को तेल या घी में तलें।

8. गरमा गरम समोसे परोसें।

– **शिल्पा मधुपम,** थाणे

***

फूल मठरी

परिवार कोअपने हाथ की बनी हुई फूल मठरी भी बनाकर खिलाओ

सामाग्री : एक कप मैदा या और अधिक इच्छा अनुसार

देसी घी 2 चम्मच
नमक स्वादानुसार
तलने के लिए घी या तेल

विधी– सबसे पहले मैदा किसी गहरे बर्तन या थाली में डाल कर उसमे स्वादानुसार नमक तथा दो चम्मच देर्शी घी, अजवाइन थोडी सी तथा जीरा हाथ से मसल क२ यदि इच्छा हो तो जीरा अजवाइन दोनों इनको अच्छी तरह से मिला लो ।फिर थोड़ा पानी डालकर माडे आटा जैसा हम रोटी का बनाते हैं उससे थोड़ा अधिक कड़ा मैदा माडे ।फिर मैदा को 20:25 मिनट के लिए ढककर रख दें 20 मिनट बाद मैदा को आप हाथ से अच्छी तरह से मसल मसल कर एकदम चिकना कर ले आप उसमें से जितनी बड़ी हम पूरी बनाते हैं उसी के अनुसार लोई तोड़ ले ।अब पहले हम उन लोई में से की 5 पुड़िया बेल ले ।एक कटोरी में एक चम्मच देसी घी लेकर उसमें डेढ़ चम्मच मैदा मिलाए तथा एक पेस्ट बना लें। अब हमारे पास जो बेली हुई पूरियां हैं एक पूरी रखें उसके ऊपर बना हुआ पेस्ट है वह अच्छी तरह से पूरी पर लगा ले, तथा थोड़ा सा मैदा छिड़क दें। उसके ऊपर दूसरी पूरी रख दें उस पूरी पर पेस्ट लगाएं तथा मैदा छिड़क दें जिस तरह से पाँचों पूरी एक के ऊपर एक रख दे तथा मैदे का परोथन लगाकर बड़ी पूरी बेल ले। पूरी ज्यादा मोटी ना हो और ना ज्यादा पतली। अब बड़ी पूरी में से कट२ या किसी छोटी कटोरी से उसके गोल गोल पीस काट ले तथा काट कर रख ले। अब एक पीस उठायें उसमें बीचो बीच में थोड़ा पानी लगायें तथा बीच से मोड़ले उसे चिपकाना नहीं है जहाँ हमने अन्दर पानी लगाया था उसी स्थान पर मोड़े हुए स्थान पर पानी लगाकर उसे फिर मोड़ दे। मोड़ने के बाद जहाँ पानी लगा है वहाँ हाथ से। थोड़ा सा दबा दे जिससे उसकी फूल की कली कली अलगहोजाये। इसी तरह सारे फूल बना ले तथा मध्यम गैस पर तेल में डालकर तले ।लो तैयार हो गई फूल मठरी

मठरी के ऊपर चाट मसाला या बुकनू बुरक दें।

– **श्रीमती उषा चतुर्वेदी,** भोपाल

***

मूँग की दाल के लड्डू

बहनों दीपावलीका त्यौहार आने वाला है। हमारे हिंदू समाज के त्योहारों की भरमार रहती है बाजार की मिठाइयाँ इस समय खाना अपने स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करना है क्यों ना हम अपने घर पर ही मिठाई बनायें अपने परिवार वालों को खिलायें उसमें जो प्रेम और स्नेह होगा वह बाजार की मिठाई में नहीं। आज हम आपको बताते हैं मूंग की दाल के लड्डू बनाने एकदम सरल तरीका।

सामाग्री : 1 कटोरी मूँग की धुली दाल । दाल भिगोना नहीं है सूखी रहेगी

शक्कर आधी कटोरी से थोड़ी ज्यादा जिस कटोरी से दाल ले उसी कटोरी से शक्कर

देसी घी आवश्यकतानुसार
सूखी कटी हुई मेवा बारीक
नारियल का बुरादा

विधी – सबसे पहले हमारे पास जो दाल है उस दाल को कढ़ाई में डालकर भूनेगे। घीनहीं डालना ऐसा ही सूखा भूनना है। जब वह सुनहरी हो जाए तब गैस बन्द कर दें और दाल को निकाल कर ठंडा होने रख दें।

हमारे पास जो शक्कर है उसे हम मिक्सी में पीस लें। तथा मेवा को बहुत बारीक बारीक काट लें। दाल जब तक ठंडी हो गई होगी उसे हम मिक्सी में पीस लें दाल बारीक पीसें दरदरीनहीं

अब कढ़ाई में देसी घी डाले तथा साथ में पिसी हुई दाल का आटा दोनों को सुनहरा होने तक भूनें बहनों ध्यान रखना गैस को सिम रखें जब वह खुशबू देने लगे और गुलाबी गुलाबी हो जाए तब गैस बन्द कर दें तथा एक थाली में निकाल ले और उसे ठंडा होने दें ठंडा होने के बाद उसमें पिसी हुई शक्कर थोड़ा सा नारियल का बुरादा तथा कटी हुई मेवा मिला दे यदि आपको घी कम लग रहा हो तो थोड़ा सा घी गर्म करके डाल सकते हैं आटा और शक्कर को अच्छी तरह से हाथ से मसल –मसल ,कर मिला ले। फिर उनके लड्डू बना ले हमारे पास जो नारियल का बुरादा बचा हुआ है उस में लड्डू लपेटकर रखें तथा ऊपर से काजू यह बादाम चिपका दें ,ताकि देखने में सुंदर लगे लो तैयार हो गए मूंग की दाल के लड्डू ना दाल भिगोना है ना दाल पीसना है आप जब चाहे जब इसे तुरंत तैयार कर सकती हैं बहनों एक बार जरूर बनाना फिर बताना खाने में कितने स्वादिष्ट हैं।

आपकी अपनी
– **ऊषा चतुर्वेदी,** भोपाल

खीर कदम

बनाने की विधि निम्नलिखित हैः

सामग्रीः 1 लीटर दूध

1/2 कप चीनी

1/4 कप घी

1/2 चम्मच इलायची पाउडर

1/2 चम्मच केसर

कदम के फूल (ताजे या सूखे)

पिस्ता या बादाम के टुकड़े (वैकल्पिक)

विधि : 1. दूध को उबाल लें और इसमें चीनी, घी, इलायची पाउडर, और केसर मिलाएं।

2. इस मिश्रण को मध्यम आंच पर पकाएं जब तक यह गाढ़ा न हो जाए।

3. कदम के फूलों को साफ करें और इन्हें खीर में मिलाएं।

4. इस मिश्रण को ठंडा होने दें और फिर इसे फ्रिज में रखें।

5. परोसने से पहले इसे पिस्ता या बादाम के टुकड़ों से सजाएं।

नोटः – ताजे कदम के फूलों का उपयोग करने से मिठाई का स्वाद और सुगंध बढ़ जाती है।

– सूखे कदम के फूलों का उपयोग करने से पहले इन्हें पानी में भिगो दें।

– खीर कदम मिठाई को फ्रिज में रखकर कई दिनों तक सुरक्षित रखा जा सकता है।

यह मिठाई बहुत लोकप्रिय है, खासकर त्योहारों और विशेष अवसरों पर।

– **अनीता चतुर्वेदी,** कोलकाता

***

मीठी गुझिया

सामग्रीः – 2 कप मैदा

– 1/2 कप घी

– 1/4 कप गुनगुना पानी

– चाशनी के लिएः

– 1 कप चीनी

– 1 कप पानी

– भरने के लिएः

– 1 कप खोया

– 1/2 कप चीनी

– 1/4 कप काजू के टुकड़े

– 1/4 कप किशमिश

– 1/4 चम्मच इलायची पाउडर

– 1/4 चम्मच केसर

विधि : 1. गुझिया के लिए मैदा, घी, और गुनगुने पानी को मिलाकर आटा गूंथ लें।

2. आटे को 10–15 मिनट तक रख दें।

3. चाशनी बनाने के लिए चीनी और पानी को उबाल लें।

4. भरने के लिए खोया, चीनी, काजू, किशमिश, इलायची पाउडर, और केसर को मिला लें।

5. आटे को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें।

6. प्रत्येक हिस्से को बेल लें और इसमें भरने का मिश्रण डालें।

7. गुझिया को चाशनी में डुबो दें।

8. गुझिया को गरमा गरम परोसें या ठंडा होने के बाद स्टोर करें।

नोटः – गुझिया का आटा नरम और लचीला होना चाहिए।

– चाशनी को गाढ़ा होने तक उबालें।

– गुझिया को ताजा बनाने से पहले चाशनी को ठंडा कर लें।

– महाराष्ट्र में दीवाली पर भी गुझिया बनाने की भी परंपरा है।

– **श्रुति चतुर्वेदी,** बंगलौर

***

शाकाहारी लोफर फ्राई रोल

सामग्रीः – 1 कप लोफर (शिमला मिर्च, गाजर, और बीन्स का मिश्रण)

– 1/2 कप पनीर के टुकड़े

– 1/4 कप शिमला मिर्च के टुकड़े

– 1/4 कप कॉर्न के दाने

– 1 चम्मच अदरक का पेस्ट

– 1 चम्मच सोया सॉस

– नमक और मिर्च पाउडर स्वादानुसार

रोल के लिए : – 1 कप मैदा

– 1/2 चम्मच नमक

– 1/4 चम्मच बेकिंग पाउडर

– 1/4 कप घी

– पानी आवश्यकतानुसार

विधि : 1. फिलिंग के लिए सभी सामग्री को मिला लें।

2. रोल के लिए मैदा, नमक, बेकिंग पाउडर, और घी को मिला लें।

3. पानी डालकर आटा गूंथ लें।

4. आटे को 10–15 मिनट तक रख दें।

5. आटे को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें।

6. प्रत्येक हिस्से को बेल लें और इसमें फिलिंग डालें।

7. रोल को बेल लें और गरम तेल में फ्राई करें।

8. गरमा गरम परोसें या ठंडा होने के बाद स्टोर करें।

नोट : – लोफर को पहले उबाल लें और फिर इसे फिलिंग में मिलाएं।

– रोल को क्रिस्पी बनाने के लिए गरम तेल में फ्राई करें।

– शाकाहारी लोफर फ्राई रोल को आप चटनी या सॉस के साथ परोस सकते हैं।

– अप्पन चतुर्वेदी, मुंबई

***

इलाहाबादी समोसा

बनाने की विधि निम्नलिखित हैः

सामग्री : – 2 कप मैदा

– 1/2 कप घी

– 1/4 चम्मच बेकिंग पाउडर

– पानी आवश्यकतानुसार

भरने के लिए : – 1 कप उर्द दाल का पाउडर

– 1/2 कप सत्तू

– 1/4 कप पिसे काजू का पाउडर

– 1 चम्मच जीरा पाउडर

– 1 चम्मच धनिया पाउडर

– 1 चम्मच गरम मसाला पाउडर

– नमक और मिर्च पाउडर स्वादानुसार

विधि : 1. समोसा के लिए मैदा, घी, नमक, बेकिंग पाउडर, और पानी को मिलाकर आटा गूंथ लें।

2. आटे को 10–15 मिनट तक रख दें।

3. भरने के लिए सभी सामग्री को मिला लें।

4. आटे को छोटे-छोटे हिस्सों में बांट लें।

5. प्रत्येक हिस्से को बेल लें और इसमें भरने का मिश्रण डालें।

6. समोसे को त्रिकोण आकार में मोड़ लें।

7. गरम तेल में समोसे को फ्राई करें।

8. गरमा गरम परोसें या ठंडा होने के बाद स्टोर करें।

नोट : – इलाहाबादी समोसा की विशेषता है इसका पतला और क्रिस्पी आटा।

– भरने के लिए मिश्रण को पहले तैयार कर लें।

– समोसे को गरम तेल में फ्राई करने से पहले आटे को अच्छी तरह से बेल लें।

– इलाहाबादी समोसा कई महीनों तक स्टोर कर सकते हैं ।

– सुचित्रा चतुर्वेदी, लखनऊ

तुलसी विवाह

- सुचित्रा चतुर्वेदी, लखनऊ

आप हमारे हृदय में, हम आपकी संतान।
आपके नाम से है जुड़ी, मेरी हर पहचान।।
पितर चरण में नमन कर, ध्यान घरे दिन रात।
कृपा दृष्टि हम पर करें, सिर पर धर दे हाथ।।

पितृ पक्ष की समाप्ति के साथ ही पूर्वजों के पूजन के बाद ही त्योहारों का मौसम शुरू हो जाता है।

सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरी नारायणि नमोस्तुते ।।

नवरात्र के साथ ही दशहरा के बाद शरद पूर्णिमा का त्यौहार पड़ता है। ऐसा माना जाता है कि शरद पूर्णिमा की रात आकाश से अमृत बरसता है, इसीलिए रात में खीर बनाकर बाहर रखते है। जिस कार्तिक मास की शुरूआत अमृत वर्षा से हो, उसकी पवित्रता का बखान शब्दों से परे है। इसीलिए कार्तिक मास को विक्रम संवत में विशेष स्थान प्राप्त है।

पूर्णिमा के बाद महिलाओं की करवा चौथ तथा अमावस्या को सबसे महत्वपूर्ण पंचदिवसीय हिन्दू त्यौहार दीपावली मनाया जाता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष एकादशी को देवोठान एकादशी कहते है, ऐसा माना जाता है कि सोते हुए देव चार मास के बाद जग जाते है, और तुलसी विवाह के साथ ही शुभ कार्य शुरू हो जाते है।

कार्तिक मास में तुलसी पूजन का भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि राजा धर्मध्वज एवं रानी माधवी के यहाँ शरद पूर्णिमा के दिन एक कन्या का जन्म हुआ। उसका नाम तुलसी रखा गया।

उसके भूमि पर पधारते ही वह ऐसी सुयोग्य बन गई, मानो साक्षात प्रकृति देवी ही हो। तुलसी को आर्शीवाद देते हुए ब्रहमा जी कहते है- अपनी कला से तुम्हें पौधा बनकर भारत में रहना पड़ेगा, तुम्हें समस्त जगत को पवित्र करने की योग्यता प्राप्त होगी।

तुलसी पत्र के जल से जिसका अभिषेक हो गया। उसे सम्पूर्ण तीर्थों में स्नान एवं समस्त यज्ञों से भी दीक्षित समझा जाता है। दस हजार गोदान से जो फल प्राप्त होता है। वही फल कार्तिक मास में तुलसी के पत्र दान से सुलभ है। भगवान से प्राप्त आर्शीवाद से गोपी एवं ग्वालों द्वारा भगवान कृष्ण की पूजा तुलसी पत्तों से ही सम्पन्न होती है।

श्री कृष्ण के शालिग्राम रूप से तुलसी विवाह का प्रावधान भी मिलता है। बताते है तुलसी का पूर्व विवाह राजा शंखचूड़ के साथ हुआ। जब राजा युद्ध में व्यस्त थे, तभी श्री हरि शंखचूड़ का रूप बदल कर तुलसी के पास पहुंचे, असलियत जानने के बाद तुलसी ने श्री हरि से कहा- आपका हृदय पाषाण के सदृश है, इसीलिए आप इतने निठुर बन गये हो, अब आप पाषाण रूप में ही रहेगें। श्री हरि के पाषाण रूप को ही भगवान शालिग्राम माना जाता है।

इन्हीं शालिग्राम भगवान से तुलसी के विवाह की कथा प्रचलित है। कार्तिक शुक्लपक्ष नवमी को तुलसी के मांगर मनाये जाते है। तुलसी वृक्ष के पास चौक लगाकर शालिग्राम की मूर्ति स्थापित करते हैं। इस दिन छप्पन पकवान बनाकर भोग लगाते है, इसीलिए इसे इच्छा नवमी कहते है। आंवले की पूजा के साथ ही उसका पकवानों में भी प्रयोग करते हैं।

देवोठान एकादशी के दिन प्रातः से ही स्नान करके पूजन प्रक्रिया शुरू हो जाती है। नयी फसल के गन्ना का प्रयोग मंडप बनाने में करते है। फिर मंडप को पूरी तरह सजाया जाता है। चौक लगाकर तुलसी-शालिग्राम विवाह की प्रक्रिया शुरू होती है। तुलसी का लहंगा चुनरी के साथ पूर्ण श्रृंगार किया जाता है। वहीं शालिग्राम को श्वेत वस्त्र जनेऊ के साथ सजाते है। फिर घी का दीपक, धूप, सिन्दूर, चन्दन, नैवेद्य और पुष्प आदि से प्रक्रिया को सम्पन्न किया जाता है। भोजन में सिंघाड़ा, शकरकन्द के साथ फलाहारी कुटु एवं फलाहार की व्यवस्था कर रिश्तेदारों एवं पड़ोसियों को दावत दी जाती है। विवाह प्रक्रिया में महिलाएँ सामूहिक गान भी करती जाती है, जिसमे ये गीत महत्वपूर्ण हैः

आसाढ़े उजियारी तीज, हे गोविन्द हे गोपाल।
कार्तिक तुलसा को रची है विवाह
हे गोविन्द हे गोपाल।।

फिर बाद में पूजन-आरती कर तुलसी विवाह के लिए कार्तिक पूर्णिमा तक प्रतिदिन पूजा-पाठ एवं कीर्तिन किया जाता है। कार्तिक पूर्णिमा को गंगा स्नान के साथ वैवाहिक कार्यक्रम सम्पन्न माना जाता है। वृन्दा, वृन्दावनी, विश्वपूजिता विश्वपावनी, पुष्पसारा, नन्दिनी, व कृष्णजीविनी आदि नामों से भी तुलसी को जाना जाता है। तुलसी को महत्व का वर्णन करते हुए कहा जाता है-मृत्यु के समय जिसके मुख में तुलसी दल रखने मात्र से उसे विष्णुलोक को प्राप्ति होती है।

तुलसी पत्रतीयं च मृत्युकाले च यो लभते।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोके महीयते ।।

साड़ी और जींस वार्तालाप.....

कु. सिद्धी चतुर्वेदी, (फरौली/गाजियाबाद)

एक दिन जींस और साड़ी में हो गई तकरार कहा साड़ी ने ठसक से –
मैं हूँ मर्यादा, परम्परा, संस्कृति–संस्कार
सौ प्रतिशत देशी
तू क्यों घुस आई मेरे देश में विदेशी

वैदिक काल से मैं स्त्री की पहचान थी
आन–बान–शान थी
घूँघट आँचल और सम्मान थी

बेटियाँ बचपन में मुझे लपेट
माँ की नकल करती थीं
दसवीं के फेयरवेल तक
पिता को चिंतित कर देती थीं

उनकी पुत्री–कन्या भी
मुझे ही पहनती थीं

भारत माँ हों या हमारी देवियाँ
देखा है कभी किसी ने
मेरे सिवा पहनते हुए कुछ

जब से तू आई है बिगड़ गया है
सारा माहौल
हर जगह उड़ रहा है
मेरा मखौल

बेटियाँ तो बेटियाँ
गुड़िया तक जींस पहनने लगी है
गाँव–शहर की बड़ी–बूढ़ी भी
तुम्हारे लिए तरसने लगी हैं

ना तो तू रंग–बिरंगी है
ना रेशमी–मखमली
फिर भी जाने क्यों लगती है सबको भली

नए–नए फतवे हैं तुम्हारे खिलाफ
नाराज हैं तुमसे हमारे खाप

फिर भी तू बेहया–सी यहीं पड़ी है
मेरी प्रतिस्पर्धा में खड़ी है ।

मुस्कुराई जींस –
बहन साड़ी मत हो मुझ पर नाराज
मैंने कहाँ छीना तुम्हारा राज

हो कोई भी पूजा–उत्सव
पहनी जाती हो तुम ही

सुना है कभी जींस में हुआ
किसी लड़की का ब्याह
फिर किस बात की तुमको आह

मैं तो हूँ बेरंग–बेनूर
साधारण–सी मजदूर

ना शिकन का डर, ना फटने का
मिलता है मुझसे आराम
दो जोड़ी में भी चल सकता है
वर्ष–भर का काम

तुम फट जाओ तो लोग फेंक देते हैं
मैं फट जाऊँ तो फैशन समझ लेते हैं

अमीर–गरीब, स्त्री–पुरुष का भेद मिटाती हूँ
कीमती समय भी बचाती हूँ
युवा–पीढ़ी को अधिक कामकाजी
सहज और जनतांत्रिक बनाती हूँ

सोचो जरा द्रौपदी ने भी जींस पहनी होती
क्या दुःशासन की इतनी हिम्मत होती

फिर भी जाने क्यों पंडित–मौलवी और खाप
रहते हैं मेरे खिलाफ

दीखता है उन्हें मुझमें अंहकार
और तुझमें संस्कार

जबकि सिर्फ अलग हैं हमारे नाम
करते हैं दोनों एक ही काम

सुनो बहन
देशी–विदेशी, अपने–पराये की बात आज बेकार है
'बसुधैव–कुटुंबकम्' प्रगति का आधार है

सम्पादक के नाम पत्र

चतुर्वेदी चंद्रिका का नया अंक प्राप्त हुआ, महासभा द्वारा सम्मानित विशिष्ट विभूतियों का संपूर्ण विवरण प्राप्त हुआ, पढ़कर गौरव का अहसास हुआ,इन सभी विभूतियों के स्वस्थ सुदीर्ध जीवन हेतु मंगलकामनाएं प्रेषित करता हूं। संपादकीय व अध्यक्षीय संबोधन समयानुकूल है।

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की द्वितीय कार्यकारिणी मिलन दिल्ली में अत्यंत सफल रहा। हम सभी लोग दिल्ली सभा के बांधवो द्वारा किये गये स्वागत सत्कार से अभिभूत है। हर व्यवस्था उत्तम थी। मीटिंग के दौरान कई विषयों पर सार्थक विचार विमर्श हुए और मुझे पूर्ण विश्वास है,इस मंथन यात्रा में जो निष्कर्ष निकले है वो भविष्य में धरातल पर भी दिखाई देंगे।

– **मनीष चतुर्वेदी,** इटावा/लखनऊ

***

सम्पादक जी पालागन।

चंद्रिका का अक्टूबर अंक मिला, मंत्री रिपोर्ट पढ़कर एकदम से दिल्ली मीटिंग ही आंखों में घूम गई।पारित प्रस्ताव भी उपयोगी हैं, लेकिन भविष्य में इन प्रस्तावों पर लागू कार्रवाई भी सूचित करेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। सम्मानित विभूतियों का स्वागत है, लेकिन शायद सभी अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। कुछ अन्यथा लिखा हो तो क्षमा प्रार्थी हूं।

– **मुकेश चन्द्र,** (होलीपुरा/कोलकाता)

यम द्वितीया

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

मथुरा जी में लगा है मेला।
यम द्वितिया पर आ रहे रेला
लगी घाट पर भारी भीड़
भाई बहिन दूरन से आये

जमुना मैया भ्रात बुलाए
अपने वाहन यमराज जी आये
टीका लगा मन में सुख पाए
यमुना मांगे यम से उपहार
यम ने दिया उन्हे उपहार

द्वितिया को जो जमुना नहाये
भैया बहन को साथ में लाएं
उसके दूँ में कष्ट निवारण
भैया दूज यम द्वितिया भीकहाये

कलम दवात का पूजन करें
चित्रगुप्त को नमन करें
बहना माड़े दूज का मड़ना
मड़ना तले बैठा भैया को
रोली मस्तक दे लगाएं

प्रेम से भोजन करा भ्रात को
फिर ले वह भेंट उपहार
जमुना मैया देय अशीष
यम जी काटो उसके क्लेश

यम द्वितिया की महिमा भारी
इसीलिए तो मथुरा प्यारी

: दीपावली की भाई दूज को यम द्वितीया बोलते हैं इस दिन भाई–बहन हाथ पकड़ कर यमुना में स्नान करते हैं तो उनके सारे पाप कट जाते हैं।

रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान माला

- विवेक चतुर्वेदी, मुम्बई

रामस्वरूप चतुर्वेदी स्मृति व्याख्यान माला के अंतर्गत नवां व्याख्यान 'परम्परा, आधुनिकता और त्रिलोचन का काव्य' नामक विषय पर हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के धीरेन्द्र वर्मा शताब्दी सभागार में दिनांक 4 अक्टूबर 2024 को संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता सुप्रसिद्ध कवि एवं प्रख्यात आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी जी थे। अतिथियों की स्वागत परंपरा के बाद स्वागत वक्तव्य प्रो. लालसा यादव जी ने दिया। उन्होंने कहा कि राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने इस व्याख्यान के लिए हमारा आग्रह स्वीकार कर इस श्रृंखला का मान बढ़ाया है। संयोजकीय वक्तव्य देते हुए डॉ.महेंद्र प्रसाद कुशवाहा जी ने कहा कि इस समिति का यह 9वां व्याख्यान आज इस स्वरूप को प्राप्त हुआ है तो इसमें रामस्वरूप जी के प्रति आप सबका प्रेम है। विशिष्ट वक्ता के रूप में हिंदी विभाग के आचार्य कुमार वीरेंद्र जी ने व्याख्यान श्रृंखला के महत्व से अपनी बातचीत शुरू करते हुए चतुर्वेदी जी के बारे में कहा कि वह एक ऐसे आलोचक रहे हैं जिनके साहित्य में हमें परंपरा और आधुनिकता में लकीर नहीं दिखती। दूसरे विशिष्ट वक्ता के रूप में रामस्वरूप चतुर्वेदी जी के सुपुत्र और वर्ल्ड बैंक, वाशिंगटन में पूर्व आर्थिक सलाहकार डॉ. विनय स्वरूप जी ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर अपनी बात रखते हुए कहा कि आज हम तकनीकी के माध्यम से किसी भी साहित्यकार या व्यक्ति के कार्य को जान सकते हैं। तृतीय विशिष्ट वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध इतिहासकार एवं उपन्यासकार हेरंब चतुर्वेदी जी ने कहा अपने वक्तव्य में कहा कि रामस्वरूप जी के हिंदी विद्वानों पर किए गए कार्य के साथ उनके पाश्चात्य साहित्य पर किए गए काम को भी देखना चाहिए। उन्होंने रामस्वरूप चतुर्वेदी के कार्य को रेखांकित करते हुए उत्तरछायावाद में इलाहाबाद की भूमिका को भी रेखांकित किया।चौथे विशिष्ट वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध कवि एवं आलोचक प्रो.अनूप कुमार जी ने अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि चतुर्वेदी जी अपने विद्यार्थियों के साथ इतने सहज थे कि उन्होंने अपनी प्रतिभा से कभी किसी को आच्छादित करने की कोशिश नहीं की। विचारधाराप्रधान आलोचना से उनकी असहमति थी।

मुख्त वक्ता के रूप में सुप्रसिद्ध कवि एवं प्रख्यात आचार्य प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी जी ने व्याख्यान के मुख्य विषय त्रिलोचन और उनकी कविता के बारे में अपनी बातचीत शुरू करते हुए कहा कि त्रिलोचन जी से मैंने बहुत कुछ पाया। त्रिलोचन हिन्दी के सबसे निर्भीक कवियों में से एक हैं। उनकी कविता हमें निर्भीक करती है। अपने सानेटों के माध्यम से उन्होंने सत्ता पर तीखे व्यंग्य किए। भाषा पर त्रिलोचन की गहरी चिंता है। उन्होंने त्रिलोचन के काव्य का संस्कृत परंपरा से संबंध जोड़ते हुए बताया कि त्रिलोचन रामायण, महाभारत और वेदों तक जाते हैं। वे कालिदास से अपने गाँव-गिराँव और देशकाल से जोड़कर नया कर देते हैं- जैसे उनकी कविता 'उषा' को देखिये। त्रिलोचन की कविता में ऐसी संस्कृतनिष्ठ शब्दावली आती है कि संस्कृत के पंडित चकरा जाएं। इस मामले में वे हिंदी कवि प्रसाद से जुड़ते हैं। उनकी कविता औघड़ की कविता है। त्रिलोचन की एक प्रेम कविता से वे अपनी बात समाप्त करते हुए कहते हैं कि वे प्रेम की अनन्यता के भी कवि हैं। इस प्रकार त्रिलोचन के काव्य में परंपरा नहीं परंपराएं हैं।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सुप्रसिद्ध कवि-आलोचक एवं संपादक प्रो.राजेंद्र कुमार ने कहा कि राधावल्लभ जी ऐसे संस्कृत व्यक्तित्व हैं जो परंपरा को सीमित नहीं करते और न ही उसे धर्मग्रंथों तक बाँधते हैं। उन्होंने कहा कि रामस्वरूप चतुर्वेदी जी में भी परंपरा और आधुनिकता के विकास की पर्याप्त जगह हैं। संभवतः 'विकास' शब्द इसी का द्योतक है। त्रिलोचन कहते हैं कि 'तुलसी बाबा भाषा मैंने तुमसे सीखी' तब वे केवल भाषा की नहीं बल्कि पूरी परंपरा के प्रवाह की बात करते हैं क्योंकि भाषा से ज्यादा प्रवाहमान चीज कुछ नहीं होती।

कार्यक्रम का संचालन हिंदी विभाग,इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर आशुतोष पार्थेश्वर जी ने किया और संयोजकीय वक्तव्य डॉ. महेंद्र प्रसाद कुशवाहा जी ने दिया।धन्यवाद ज्ञापन इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर भूरेलाल जी ने किया। कार्यक्रम में इलाहाबाद विश्वविद्यालय के आचार्यों सहित काशी हिंदू विश्वविद्यालय के आचार्य,विद्यार्थी और शोधार्थी मौजूद रहे।

शाखा समाचार

लखनऊ

लांगुरिया व भजन समारोह

रविवार 6 अक्टूबर 24 को श्री महेश चन्द्र जी (मैनपुरी) के नेहरू नगर लखनऊ के आवास पर महिलाओं द्वारा माता के भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसकी शुरुआत समाज की वरिष्ठ नेत्री श्रीमती रश्मि जी (मोती नगर) द्वारा मां दुर्गा के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुई, कार्यक्रम आयोजित करने में लखनऊ से महासभा महिला प्रकोष्ठ सदस्यों बबिता जी, सुचित्रा जी,अमिता जी का भी भरपूर सहयोग मिला। भजन कीर्तन में रश्मि जी, अंजलि जी,विभा जी, नीलम जी, सुचित्रा जी, संगीता जी, बबिता जी,वर्षा जी, वंदना जी,रीतिका जी के साथ सभी ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, ममता जी एवं अंजना जी तालियां बजाकर ताल मिला रही थी। भजनों के बाद ढोलक मंजीरा के साथ लंगुरिया एवं गीतों से नृत्य व संगीत का जो शमां बंधा तो ,सभी तालियां बजाकर खुशी जाहिर कर रहे थे। नृत्य कलाकारो में अमिता जी, नीलिमा जी, रोली जी, शालिनी जी , निम्मी जी ने सक्रिय भूमिका निभाई। ढोलक पर नीलिमा जी, अंजलि जी तो मंजीरा पर रश्मि जी,वर्षा जी ने धमाल मचाई। प्रसाद वितरण एवं स्वल्पाहार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

– **विभा अतुल,** लखनऊ

***

मुंबई

मुंबई माथुर चतुर्वेदी समुदाय की समस्त महिलाओं द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती शिखा पाठक द्वारा सभी का स्वागत करते हुए हुई, जिसके बाद श्रीमती सुनित चतुर्वेदी ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक माता के भजन गाए, जिससे माहौल भक्तिमय हो गया। इसके बाद ढोलक की ताल पर नृत्य और संगीत का अद्भुत संगम हुआ, जिसे सभी ने भरपूर आनंद के साथ सराहा। अंत में, स्वादिष्ट भोजन के साथ इस उल्लासपूर्ण आयोजन का समापन हुआ, जिसने इस शाम को और भी यादगार बना दिया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में जिनका विशेष योगदान रहा, उनके प्रति हार्दिक आभार और धन्यवाद। हम विशेष रूप से श्रीमती अंजू चतुर्वेदी, श्रीमती शिल्पा चतुर्वेदी, श्रीमती शिखा पाठक, श्रीमती रूपम चतुर्वेदी, श्रीमती नीरजा चतुर्वेदी, श्रीमती अचला चतुर्वेदी, श्रीमती रितु चतुर्वेदी और श्रीमती ग्रीना चतुर्वेदी का धन्यवाद करते हैं, जिनके सहयोग और समर्पण के बिना यह आयोजन सफल नहीं हो पाता। आपका समर्थन और योगदान इस कार्यक्रम को यादगार बनाने में महत्वपूर्ण रहा।

– **श्रीमती अंजू चतुर्वेदी,** महिला प्रकोष्ठ

***

कानपुर

दिनांक 06/10/2024 को मेरे निवास 101/2 साइड न०1 में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के तत्वावधान में महिला प्रकोष्ठ,कानपुर द्वारा पहली बार माँ भगवती के भजन,लांगुरिया आदि के गायन का कार्यक्रम कानपुर समाज की महिलाओं के जोश एवं देवी माँ की कृपा से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।जिसमें प्राची जी,मीता जी, शिवानी जी,रक्षा जी,नन्दिता जी,उपमा जी,मधु जी,प्रीति जी,बबली जी,गीता जी, रेनु जी,रिंकू जी,विभा जी,साधना जी, अंजलि जी,वैशाली जी संध्या जी,इति जी,रंजना जी,आदि महिलाओं ने कार्यक्रम में प्रमुखता से मॉ का गुणगान किया।

– **आभा चतुर्वेदी,** सदस्य
महिला प्रकोष्ठ कानपुर

भोपाल

दिनांक 09/10/2024 को मेरे भोपाल स्थित निवास में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के तत्वावधान में महिला प्रकोष्ठ,भोपाल द्वारा पहली बार माँ भगवती के भजन,लांगुरिया आदि के गायन का कार्यक्रम भोपाल समाज की महिलाओं के जोश एवं देवी माँ की कृपा से सफलता पूर्वक संपन्न हुआ। माता की झांकी को बहुत

ही मनमोहक ढंग से सजाया गया था । भजन गायन में ऊषा जी (सभापति, महासभा), शिवांगी जी,(संयोजक,महिला प्रकोष्ठ) पदमरेखा जी, अंजना जी, सीमा जी, निकिता जी, मनीषा जी,शालिनी जी, दीपा जी, निशा जी,सपना जी, सोनल जी, रजनी जी,जगदम्बा जी, शारदा जी, पूजा जी, नीलम जी, चित्रा जी, अनामिका जी, मंजूषा जी आदि महिलाओं ने कार्यक्रम में प्रमुखता से माँ का गुणगान किया। कार्यक्रम के अंत में आरती के बाद मिठाई का भोग मां को लगाया गया व प्रसाद में हलवा, पूरी और चना का डिब्बा वितरित किया गया। भजन के दौरान महिलाओं ने खूब नृत्य में भाग भी लिया व भरपूर आनंद भी लिया।

– शिवांगी चतुर्वेदी
राष्ट्रीय संयोजक, महिला प्रकोष्ठ

***

अहमदाबाद

सभी बहनों व भाईयों को पालागन

हर्ष के साथ सूचित करना हैं कि , श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा की अध्यक्षा माननीय उषा जी द्वारा श्री माथुर चतुर्वेदी महिला प्रकोष्ठ गुजरात के गठन की संस्तुति की हैं।

माननीय उषा जी ने, श्रीमती मंजूषा चतुर्वेदी जी को श्री माथुर चतुर्वेदी महिला प्रकोष्ठ गुजरात की महिलाओं को संगठित करने की जवाबदारी देते हुये संयोजिका के महत्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया है। अपनी गुजरात शाखा श्रीमती मंजूषा जी (पिंकी जी)के नेतृत्व में अच्छे मजबूत संगठन की कामना करते हुये उन्हें भरपूर समर्थन देने के लिये भी प्रतिबद्ध हैं।

– अध्यक्ष, अहमदाबाद शाखा

***

कोटा

दिनांक 09.अक्टूबर 2024 को श्री माथुर चतुर्वेदी सभा कोटा का नवरात्रि एवं गरबा महोत्सव चतुर्वेदी सभा भवन दादाबाड़ी में आयोजित किया गया। महासचिव श्री आलोक चतुर्वेदी व शिव ने उपस्थित जनों का स्वागत और अभिनंदन किया। कार्यक्रम का आरम्भ माता के चित्र पर माल्यार्पण कर,दीप प्रज्वलित कर अध्यक्ष विनय चतुर्वेदी व अन्य नृत्य के रूप में गणेश वन्दना की प्रस्तुति कु. यति और कृति द्वारा दी गई। कु. अनुप्रिया द्वारा माता की स्तुति का मधुर स्वर में गायन किया गया। श्रीमती अर्चना, अरुणा, अनुपमा, रेणु, राखी सरिता, शिवानी, सन्ध्या तथा मृदुता ने सामूहिक रूप से माता के भजनों का मधुर स्वरों में गायन किया जिससे पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। महिलाओं, बालक बालिकाओं तथा पुरुषों के अलग अलग ग्रुप बनाकर एक से एक बढ़कर प्रस्तुतियां दी। खेलकूद के कार्यक्रम म्युजिकल चेयर रेस में खूब आनंद आया। शालिनी प्रथम और रेणु ने द्वितीय स्थान प्राप्त

किया। किड्स वर्ग में कृति प्रथम तथा आराध्या ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। डान्डिया नृत्य में महिला वर्ग में नुपुर और शिवानी, किशोर वर्ग में यशस्वि और आना तथा पुरुषों मे त्रिदेव और तुषार क्रमशः प्रथम व द्वितीय रहे। सर्वोत्तम परिधान में श्वेता प्रथम रही। डांडिया नृत्य महिला वर्ग में सुर्या को सान्त्वना पुरुस्कार मिला। कार्यक्रम में महिला या पुरुष, सबसे सुन्दर पौशाक पहनकर आनेवाले पुरुष/महिला, सबसे अच्छी गरबा ड्रेस वाले को भी पुरुस्कृत किया गया। संचालन श्री शशि चतुर्वेदी ने द्वारा किया गया। खेलकूद प्रतियोगितायें अरुणा, अनुपमा, अर्चना द्वारा सम्पन्न करवाये गये। व्रत वालों लिये भी फलाहार की अलग से व्यवस्था की गई थी।

– आलोक चतुर्वेदी,मंत्री

***

ग्वालियर

दिनांक 13/ 10/ 2024 रविवार को मेरे निज निवास ,06 शारदा विहार सिटी सेंटर ग्वालियर में श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के तत्वाधान में महिला प्रकोष्ठ ग्वालियर द्वारा मां भगवती के भजन, लांगुरिया आदि के गायन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम शाम 5:00 बजे से प्रारंभ हुआ कार्यक्रम के प्रारंभ में श्रीमती क्षमा चतुर्वेदी द्वारा सभी आगंतुकों का गर्म जोशी से स्वागत किया गया तथा कार्यक्रम में सर्वप्रथम भगवान गणेश की वंदना श्रीमती कामना चतुर्वेदी द्वारा मधुर शब्दों में प्रस्तुत की गई इसके बाद देवी के गीतों की रगांरगं शुरुआत हुई इसमें बहुत सारी बहनों

ने भाग लिया जिसमें से मुख्य रूप से श्रीमती क्षमा , श्रीमती विदुषी , श्रीमती दीपाली , श्रीमती संध्या , श्रीमती अलका, श्रीमती शीला, श्रीमती निशा , श्रीमती प्रियंका ,श्रीमती रीता, श्रीमती मोना, श्रीमती रौली की प्रस्तुति शानदार रही और अन्य सभी बहनों का भरपूर सहयोग रहा। कार्यक्रम के अंत में मां दुर्गे की आरती और अन्नकूट प्रसाद का वितरण किया गया।

– **क्षमा चतुर्वेदी,** ग्वालियर राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य

नोएडा

नोएडा में मां भगवती के भजन लांगुरिया श्रीमती गायत्री जी के निवास पर संपन्न हुए। राष्ट्रीय महिला प्रकोष्ठ के उपसंयोजक श्रीमती अनुपमा जी के नेतृत्व में यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.के अंतर्गत) कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें श्रीमती प्रीती,श्रीमती प्राची, श्रीमती मोनिका, श्रीमती पूनम, श्रीमती पल्लवी, श्रीमती अनिता, श्रीमती गायत्री के साथ समाज की अनेक महिलाएं उपस्थित थी।

– **श्रीमती अनुपमा चतुर्वेदी,**
राष्ट्रीय उपसंयोजक

समाज समाचार

- सुश्री रिद्धिमा चतुर्वेदी सुपुत्री श्री अनिल चतुर्वेदी- श्रीमती सुषमा चतुर्वेदी (सांगोद,कोटा) ने नीट की परीक्षा में 685 अंक प्राप्त कर A।R-4962 रैंक प्राप्त की।बधाई।

000

- अर्पित चतुर्वेदी पुत्र श्री पवन चतुर्वेदी (पुरा/भोपाल) की नियुक्ति येस बैंक भोपाल में कलेक्शन मैनेजर के पद पर हुई। इस उपलक्ष्य में महासभा की अन्नपूर्णा योजना में श्रीमती मनीषा-श्री पवन चतुर्वेदी ने 2100/- प्रदान किये। बधाई।

बिछड़े स्वजन

* कु. हर्षिता चतुर्वेदी सुपुत्री श्री शेखर चतुर्वेदी (चंद्रपुर/इंदौर)काआकस्मिक निधन दिनांक 2.10.2024 को अल्प अस्वस्थता से अपोलो हॉस्पिटल इंदौर में हो गया।

* श्री पंकज चतुर्वेदी पुत्र स्व. लखपत राय चतुर्वेदी (फरौली) का देहान्त उम्र लगभग 62 वर्ष की आयु में दिनाँक 13 नवंबर 2024 को आगरा के अस्पताल में हो गया।

* श्रीमती कुसुम चतुर्वेदी पत्नी स्व० अम्बिका प्रसाद चतुर्वेदी (सिकंदरपुर खास/आगरा) का देहांत दिनाँक 12/11/2024 को हो गया।

* श्री विष्णु चतुर्वेदी (पारना बाह /लखनऊ) का दिनांक 3 अक्टूवर 2024 को बीमारी के पश्चात लखनऊ में निधन हो गया।

* श्रीमती मंजुला पत्नी दिलीप जी(होलीपुरा/बाराबंकी) का लोहिया अस्पताल लखनऊ में 1अक्टूबर 2024 को निधन हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

निर्मला कंस्ट्रक्शन कंपनी

Nirmala Construction COMPANY

खुशियों एवं प्रकाश के महापर्व

दीपावली

की हार्दिक शुभकामनाएं

Akshay Choubey

Proprieter

B.E. (Civil Engineering) – Priyadarshini College, Nagpur
M.Tech - Birla Institute of Technology, Mesra (Ranchi)

Bazariya Ward No.1, Jawalamai Chouraha, Damoh(M.P.) -470661

+91 8770955872
+91 8602266219

दमोह परिवार - स्व. कैलाश नाथ चौबे (बगियावाले)
पुत्र विनोद, देवेंद्र, गजेंद्र, राजेंद्र, स्व. नीरज चौबे
भाई - तनय, सार्थक, विभोर, सुयोग, यश चौबे
पार्थ चौबे

(र.क्र. 2957)

Best Wishes From

Mr. Vinod Chaturvedi
Chief Human Resources Officer (CHRO)
Shree Cement Limited,
Cyber City, Gurgaon – 122002
Mobile – 8108158116
Email : vinod.chaturvedi@shreecement.com / vinodc.99@gmail.com

&

Mrs. Vatsala Chaturvedi
Mobile: 7738223130

Ms. Aashiree Chaturvedi
Lead Digital Marketing
Blue Dart - DHL Group
Andheri East, Mumbai
Mobile: 8879422506

Master Shreay Chaturvedi
Sales Associate
Tech Mahindra
Manchester (UK)
Mobile: +44 7947161962

"Kachpura" Niwasi – "Mumbai" & "Gurgaon" Pravasi

~ In Memory and Blessings from our Parents and Elders ~

Father: Late Sh. Pratap Chand Chaturvedi Ji
Mother: Late Smt. Urmila Ji (Beto Ji)

Grand Father – Late Sh. Dwarka Prasad Ji
Grand Mother: Late Smt. Sarbato Ji

Maternal Grandfather: Late Sh. Lakshmi Pat Ji
Maternal Grandmother: Late Smt. Rama Devi
(Neem Mandi, Mainpuri)

Uncle & Aunt:
Late Sh. Munn Lal Ji & Late Smt. Bimla Devi Ji

Late Sh. Haresh Ji & Late Smt. Raj Kumari Ji

Late Sh. Devendra Ji (Lalla Ji) & Late. Smt. Shailja Ji

Sh. Ramakant Ji & Smt. Vimla Ji
(289/9 Moti Ngr, Lucknow)

Sh. Krishna Kant Ji & Smt. Rita Ji
(206 kanchempearl, Laxmiganga Enclave, Pipeline Road, Hyderabad)

Elder Brother: Late Sh. Ashok Ji

Bua Ji & Phupha Ji:

Late. Smt.Bimla Ji & Late Sh. Harkumar Ji
(Bateshwar)

Smt. Shobha Ji & Late. Sh. Ajit Ji
(Hindaun / Palam, Delhi)

Father-In-law: Late Sh. Brijnath Ji
Mother-In-law: Late Smt. Mohini Ji
(Etawah)

Grand Father-In-law: Late Sh. Hari Narayan Ji
Grand Mother-In-law: Late Smt. Asharphi Ji

Grand Maternal Father-In-law:Late Sh.Kailash ji
Grand Maternal Mother-In-law:Late Smt.Usha Rani Ji
(Late.Smt.Sita Ji)
(Mishrana, Mainpuri)

Grand Maternal Uncle-In –law: Late Sh. Ashok Ji

Sister-In-law: Mrs. Renu
Brother-in-law: Sh. Saurabh
Nephew: Master Raghav
(Holipura / Kanpur)

Residences

Mumbai	Gurgaon	Manchester	Lucknow
702, Sea Nymph CHS, Green Field, A.B. Nair Road, Juhu Opposite, Juhu Post Office Mumbai - 400049 (Maharashtra)	MGF Vilas, SA – 406 Tower – J, DLF Phase 2 Akashneem Marg Sector 25 Gurgaon – 122002 (Haryana)	309, South Block Kampus Apartments 59, Chorlton Street M1 3FY Manchester (United Kingdom)	289/9 Moti Nagar Lucknow – 226004

(र.क्र. 2828)

II Shri Ganeshay Namaha II

दिपावली की हार्दिक शुभकामनायें ...

Prem Rice Mill

- Pramodkumar Kashiramji Bhalotiya
- Rohit Lokeshkumarji Bhalotiya
- Sumit Lokeshkumarji Bhalotiya
- Vinit Lokeshkumarji Bhalotiya

Tel. No. (Off.) : 07182 - 237869
Mob. No. : 9326812354
9326810020
9422831345

Plot No. C-1, MIDC, Mundipar, Gondia - 441614 (M.S.)
Office : Behind R.S. Weigh Bridge, Fulchur, Gondia - 441614

(र.क्र. 2958)

दिपावली की हार्दिक शुभकामनायें ...

JAGDAMBA
JUTE INDUSTRIES

MANUFACTURER OF GUNNY BAGS & COMMISSION AGENT

With Best Compliments From :

Sunil Agrawal

98231 10723, 9326811927

Ayush Agrawal (Babu)

8551861900

Durga Sadan, Gurunanak Ward,
GONDIA - 441601 (M.S.)
Tel. : 07182-235851 (Factory),
237827 (Office)

(र.क्र. 2958)

दिपावली की हार्दिक शुभकामनायें ...
Durga Traders
Canvassing Agent
Paddy, Rice, Pulses & Oil Seeds Etc.
महेश गोयल
अध्यक्ष – श्री मारवाडी युवक मंडल, गोंदिया
अध्यक्ष – विदर्भ राईस एक्सपोर्ट ब्रोकर असोसिएशन
27, Gurunanak Ward, Grain Market Road, GONDIA-441601 (M.S.)
Tel. : 07182-234466, 9422130756, 8412042557 (Manu) Mahesh Goyal
E-mail : ricecity456@gmail.com
(र.क्र. 2958)

Wish You a Very Happy Dipawali

Lac Processing Industry

High Class Shellac & Seedlac Manufacturers

KESHAR
AGROTECH

Lakh | Lakh Dana | Lakh Chapda | Rice

With Best Compliments From :

*** Pravin Pardhi *Mahendra Pardhi**

Post- Mangejhary (Jairamtola), Tah. Waraseoni, Dist. Balaghat (M.P.) - 481331

E-mail : mahendrapardhip@gmail.com, Website : www.cklac.com

Works: 3/2 Village Kera, Post- Bhandi, Tehsil- Waraseoni, District- Balaghat ,(M.P.) 481331

Reg. Office: Village Dongariya, Waraseoni Road, Tehsil- Lalburra, District- Balaghat, (M.P.)481331

8989004872 , kesharagrotech@gmail.com

(र.क्र. 2958)

सादर नमन

स्व. श्रीमती रूक्मणी चतुर्वेदी

स्व. श्री प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी

स्व. श्रीमती पार्वती चतुर्वेदी

स्व. श्री महेश चन्द चतुर्वेदी

स्व. श्रीमती कमला चतुर्वेदी

स्व. श्री प्रभात चन्द्र चतुर्वेदी

स्व. श्रीमती चँदा चतुर्वेदी

स्व. श्रीमती बीना चतुर्वेदी

श्रद्धावनत

नवीनचन्द, त्रिभुवननाथ, हरीश, गिरीश, अजय कुमार, अरूण कुमार, गौतम, गौरव, विक्रम, मनीष, यश, देवल, स्पर्श, तेजस, पुलकित, अविश, अंश, गर्वित

गोविन्दपुरा (बसुआ गोविन्दपुरा)

(र.क्र. 2944)

।। अश्रुपूर्ण श्रध्दांजलि। ।

परिवार जिनका मन्दिर था
स्नेह जिनकी शक्ति थी
परिश्रम जिनका कर्तव्य था
परमार्थ जिनकी भक्ति थी।
ऐसी पुण्य आत्माओं को भावपूर्ण श्रध्दांजलि। ।

मनोज कुमार चतुर्वेदी(दीपक)
स्वर्गवास 16.09.2020

दीपा चतुर्वेदी
स्वर्गवास 09.11.2023

शोकाकुल
अनुराधा चतुर्वेदी (पुत्री)
कछपुरा(बाह)/मथुरा

अश्रुपूर्ण स्मरण एवं श्रद्धांजलि
प्रथम पुण्यतिथि

जन्मः–4 फरवरी 1938

निर्वाण–: 29 दिसम्बर, 2023

श्रीमति प्रतिभा चतुर्वेदी (अम्मा)

पत्नी स्व. श्री भरत चंद्र चतुर्वेदी (कोटा)

आपके सस्कार तथा स्नेहासिक्त, सरल स्वभाव एंव आदर्श,
हम सभी को हमेशा प्रेरणा देते रहेगे।

शोकाकुल :–

पुत्रियां :– मंजुल–नीरज,
मुक्ताः– डां0 प्रशांत

धेवता व धेवती :– हर्षवर्धन, तारिषी
जयवर्धन, गार्गी

देवर–देवरानी :– मिथलेश– सुषमा

भतीजा–पत्नी :–
प्रभात, अक्षय–मंजु, सुभाष– सगुना, अजय– सुमति,
संजय, विनीत–नीरजा, मोहिल–अर्चना,
तन्मय–रीना, उत्पल

चिला–विजय, रश्मी–डॉ. श्याम, रेनू, संध्या–अतुल, डॉ. नुपुर, सीमा–उमेश, शुभ्रा–सौरभ,
झिलमिल–राकेश, समीर–राखी, सोनू–संदीप, रचित, प्रीती–सुदर्शन, प्रशांत–सुवीरा,
डॉ. कनुप्रिया–डॉ. अमित, अभिनव, मोहिता–लव, सिद्धार्थ–मितालीं, जूही, पार्थ,
सुहेल–भावना, सुरभि, रोहिन, शोर्या, ऋतविक–राशि, सातविक, अदिती–अभिषेक, अच्युत–भूमिका
कबीर, मल्हार, प्रखर–हर्षिता, सोम्या, सृष्टी, साहिल, नवल, अंगद, नेहिल, शिरालीं,
गुंजा, रिद्धिमा, अन्नया, शिवेन एंव आरिष

समस्त भरत स्मृति परिवार
न्यु पोस्ट ऑफिस रोड, भीमगंज मण्डी, कोटा राजस्थान–324002
मो. 9413385655, 9001098530

R.N.I. NO. MAR/2000/2438
डाक पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/44/2024–26
''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' नवम्बर 2024

पत्र व्यवहार का पता– ''चतुर्वेदी चन्द्रिका'' ई–8/जी–2/255,
गुलमोहर कॉलोनी, अरेरा कॉलोनी, भोपाल–39,
ईमेल –sampadak.chaturvedichandrika@gmail.com

श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कोटा (रजि.)

सदैव निःस्वार्थ समाज सेवा में अपनी अग्रणी भूमिका निभाने को तत्पर

9 अक्टूबर 2024 को आयोजित नवरात्रि एवं डांडिया उत्सव की झलकियाँ

अध्यक्ष	महासचिव	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	संयुक्त सचिव
विनय चतुर्वेदी	आलोक चतुर्वेदी	अतुल चतुर्वेदी (DCM)	शिव चतुर्वेदी	विजय चतुर्वेदी

संगठन सचिव	प्रचार सचिव	खेल एवं सांस्कृतिक सचिव	संयोजक युवा प्रकोष्ठ
अर्चना चतुर्वेदी	शरद चतुर्वेदी	संदीप चतुर्वेदी (राजा)	तरुण चतुर्वेदी

संरक्षकगण – डॉ. कमलकिशोर चतुर्वेदी, ललित चतुर्वेदी, कमलेश रावत
उपाध्यक्षगण – डॉ. दयानंद चतुर्वेदी, आदित्य चतुर्वेदी, शशि चतुर्वेदी, कौशल किशोर चतुर्वेदी एवं समस्त कार्यकारिणी